उदयपुर की सुहानी यादें

लेखक: पारतो सेनगुप्ता

आज मैं आप लोगों को एक असली घटना सुनाने वला हूँ। यह घटना मेरी ज़िंदगी की बहुत ही सुखद घटना है। पिछले साल मैं उदयपुर में होटल शिकरबाड़ी में रुका हुआ था। यह होटल एक सुनसान जगह पर बहुत अलीशान तरिके से बनाया हुआ है और इस होटल के चारों तरफ जंगल भी है। उस दिन शाम को थोड़ी हल्की बूँदा बाँदी हुई थी और इसलिए मौसम सुहाना था। मैं होटल के स्वीमिंग पूल में नहाने के लिए गया हुआ था। मैं इसलिए अपने कपड़े उतार करके और स्वीमिंग कॉस्टूम पहन कर एक बड़ा पैग ब्लडी मैरी लेके स्वीमिंग पूल पर पहूँच गया। मैंने स्वीमिंग पूल पर जा करके पहले अपना ड्रिंक एक टेबल पर रखा और फिर स्वीमिंग पूल में डुबकी लगायी और हल्के–हल्के स्ट्रोक के साथ तैरने लगा। थोड़ी देर तैरने के बाद मैंने एक बहुत खूबसूरत औरत को, जिसकी उम्र अंदाजन करीब २७–२८ रही होगी, स्वीमिंग पूल की तरफ आते देखा। उस औरत के हाथ में एक इंगलिश की किताब थी। थोड़ी देर तक तैरने के बाद मैं पूल से बाहर निकल कर अपनी टेबल पर आके बैठ गया और अपने ड्रिंक में चुसकी लगाने लगा। वो औरत भी मेरी टेबल के पास बैठी अपनी किताब पढ़ रही थी।

मैं उस औरत की खूबसूरती से बहुत ही प्रभावित हो गया था और आँखें फाड़– फाड़ कर उसको देख रहा था। वो औरत एक जींस, टॉप और हाई हील्स के सैंडल पहनी हुई थी। उसकी जींस और टॉप इतना टाईट था कि उसका हर अंग बाहर झलक रहा था। मैंने अपने ड्रिंक से एक लम्बा घूँट लिया और फिर से पूल के तरफ बढ़ गया। लेकिन जाने से पहले मैंने उस औरत को एक बार फिर से घूर कर देखा। मैंने पूल पर जाके छलाँग लगायी और तैरने लगा। तैरते समय मैं बार–बार उस औरत को देख रहा था और थोड़ी देर के बाद देखा वो औरत भी मुझे देख रही है और हल्के–हल्के मुस्कुरा रही है। मैं भी तब उसको देख कर मुस्कुरा दिया और पूल से बाहर आकर उसके पास जाकर उसको हल्के से "हैलो" बोला।

वो भी जवाब में "हैलो" बोली और फिर धीरे से बोली, "आप बहुत अच्छा तैरना जानते हैं और आपका बदन भी काफी गठीला है।" मैं धीरे से उसको "थैंक्स" बोला और अपने आप को उससे परिचय कराया। उसने भी तब अपना परिचय दिया और बोली, "मेरा नाम प्रतीभा है और मैं अपने पती के साथ उदयपुर आयी हुई हूँ। इस समय मेरे

पती ज़वार माईंस, जो कि उदयपुर से करीब ५० मील दूर है, अपने कारोबार के सिलसीले में गये हुए हैं। मैं अपने कमरे में अकेले बैठे बैठे बहुत बोर हो गयी थी इसलिए इस समय स्वीमिंग पूल के किनारे आ कर बैठी हूँ।"

मैंने उससे पूछा "आप क्या पीना पसंद करेंगी?" वो पलट कर मुझसे पूछी, "आप क्या पी रहे हैं?" मैंने बोला, "मैं ब्लडी मैरी पी रहा हूँ" तो प्रतीभा बोली, "मैं भी ब्लडी मैरी ले लूँगी।" मैंने तब जाकर दो ब्लडी मैरी का आर्ड दे दिया। अचानक एक वेटर कॉर्डलेस फोन ले करके हम लोगों के पास दौड़ा आया और बोला, "मैडम आपका फोन है।" प्रतीभा फोन वेटर से लेकरके फोन पर बातें करने लगी। अचानक उसकी आवाज़ बदल गयी और फोन पर बोल रही थी, "ओह गॉड! ओह गॉड! हाँ! ओके! नहीं! मैं बिल्कुल ठीक हूँ! हाँ! मैं होटल में ही रहूँगी!" और फिर उसने फोन काट दिया। प्रतीभा के चेहरे पर परेशानी मुझे सफ-सफ दिखलाई दे रही थी। मैंने प्रतीभा से पूछा, "क्या हुआ?" प्रतीभा बोली, "रोड में एक टैंकर का ऐक्सीडैंट हो गया है और इसलिए पोलिस ने रोड ब्लॉक कर दिया है। जब तक रोड ब्लॉक खतम न होगा, कोई गाड़ी आ या जा नहीं सकेगी और यह रोड ब्लॉक कल सुबह तक ही साफ होगा।" फिर कुछ रुक कर प्रतीभा बोली, "अब मेरे पती कल सुबह तक ही आ पायेंगे।" यह सुन कर मैं भगवान को लाख-लाख शुक्रिया बोला, क्योंकि यह मेरे लिए एक बहुत सुनहरा अवसर था।

मैं तब प्रतीभा को साँतवना देते हुए बोला, "अरे प्रतीभा ज़ी आप मत घबराइए। आपके पती बिल्कुल ठीक हैं और कल सुबह वो सही सलामत लौट आयेंगे।" तब प्रतीभा धीरे से बोली, "मुझे अपने पती से ज्यादा अपने लिए फ़िक्र है। अब पूरे दिनभर के लिए इस होटल में कैद हो गयी।" तब मैं मुस्कुरा कर बोला, "अब ज्यादा फ़िक्र मत करिए। मैं आपसे वादा करता हूँ कि आप बोर नहीं होंगी।" तब प्रतीभा ने हँसते हुए मुझसे पूछा, "आप कैसे मुझे बोर नहीं होने देंगे?" तब मैंने प्रतीभा से बोला, "मैं आपको अच्छे अच्छे किस्से सुनाऊँगा, जोक सुनाऊँगा, और इसके अलावा आप जो भी कहेंगी मैं वो भी करूँगा।" तब तक वेटर हम लोगों के लिए ड्रिंक्स ले आया और मैंने प्रतीभा को एक ग्लास ब्लडी मैरी पकड़ा दिया। प्रतीभा ने बड़ी अदा से ब्लडी मैरी मेरे हाथों से लिया और फिर मुस्कुरा करके "थैंक्स" बोली। फिर मैंने भी अपना ग्लास उठा लिया और प्रतीभा से बोला, "चीयर्स"। तब प्रतीभा भी मुझसे बोली, "चीयर्स तुम्हारे गठीले बदन के लिए।" जब प्रतीभा ने मेरे बदन के लिए कमेंट किया तो मैं बोला, "नहीं प्रतीभा डीयर! तुम तो किसी भी फिल्म एक्ट्रैस से बहुत ज्यादा सुंदर हो। तुम्हारा

Hindi Fonts By
SINSEX

शरीर भी तो बिल्कुल तराशा हुआ है।" मेरी बातों को सुनकर प्रतीभा बहुत झेंप गयी और फिर शरमा कर बोली, "धत, तुम बहुत ही शैतान हो।" हम लोग अपने अपने ड्रिंक्स में चुसकी लगाते रहे और बातें करते रहे। हम लोग ऐसी बातें कर रहे थे कि जैसे हम लोगों की जान पहचान बहुत पूरानी हो। प्रतीभा मुझसे मेरी परसनल लाईफ के बारे में कुछ सवाल की और अपनी ज़िंदगी की बहुत सरी बातें मुझसे बोली। प्रतीभा तो यहाँ तक बोली कि उसका पती "गुज्जू गाँडू!" और सैक्स से ज्यादा लगाव नहीं रखता। मैं प्रतीभा की बातों को सुनकर बहुत ही हैरान हो गया। प्रतीभा मुझसे मेरी लव लाईफ के बारे में भी कुछ सवाल की। मैंने प्रतीभा से बोला, "मैं सैक्स और औरतों को बहुत चाहता हूँ और मैं सैक्स का पुजारी हूँ। मुझे बिस्तर पर औरतों के साथ तरह तरह के एक्सपैरीमेंट करने में बहुत मज़ा आता है।" मेरी बातों को सुन कर प्रतीभा कुछ देर तक चुप-चाप बैठी रही। ऐसा लग रहा था कि वो कुछ गहरी सोच में हो। हम लोगों ने एक-एक ग्लास और ब्लडी मैरी पिया और तभी एका एक ज़ोरों की बारीश शूरू हो गयी। स्वीमिंग पूल के आसपास कोई सर छुपाने की जगह नहीं थी और इसलिये हम दोनों कमरे की तरफ़ भागे। कमरे तक पहुँचते पहुँचते प्रतीभा बुरी तरह से भीग गयी और उसकी गोल-गोल चूचियाँ भीगे ब्लाऊज़ पर से साफ़ साफ़ दिखने लगी। मैं आँखें फाड़ फाड़ कर प्रतीभा की लाल रंग के ब्रा में कैद गोल गोल और तनी हुए चूचियँ देख रहा था। मैं जितना प्रतीभा की चूचियों को देख रहा था वैसे-वैसे मेरा लंड खड़ा हो रहा था और मुझे ऐसा लग रहा था वो भी बाहर निकल कर प्रतीभा की सुंदरता को सलम करना चाह रहा हो। जब प्रतीभा ने मेरी तरफ देखा और मेरी हालत को समझ गई तो वो खिल- खिला कर हँस पड़ी।

हम लोग अपने अपने कमरे तक पहूँच गये। प्रतीभा और मेरा कमरा बिल्कुल अगल बगल था। जब मैं अपने कमरे में घुस रहा था तो प्रतीभा मुझसे बोली, "कपड़े बदल कर मेरे कमरे में आ जाना।" मैंने कहा, "ठीक है, मैं अभी कपड़े बदल कर आता हूँ। लेकिन हो सकता है आपके साथ अकेले कमरे में होने से मैं अपने आप को रोक नहीं पाऊँगा।" तब प्रतीभा हँस कर बोली, "कोई बात नहीं। मैं भी तो देखूँ कि आप मेरे साथ अकेले कमरे में क्या क्या कर सकते हैं?" फिर मैं हँस कर अपने कमरे में चला गया और जब कपड़े बदल कर मैं प्रतीभा के कमरे में गया तो देखा प्रतीभा अपने कपड़े बदल चुकी है और वो अब पारदर्शी टाइप का गाऊन पहन कर बिस्तर पर बैठी हुई है।

प्रतीभा ने कुछ बढ़िया सैंट लगा रखी थी और उसकी खुशबू पूरे कमरे में फैल रही थी।

मैं प्रतीभा के कमरे में जाकर एक लो चेयर पर बैठ गया। तब प्रतीभा अपनी जगह से उठ कर मेरे पास आयी और मेरे घुटनों पर बैठ गयी और अपने हाथों को उठा कर मेरे गले में डाल दी और मुझसे बोलने लगी, "ओह मेरे प्यारे, यह तो बहुत ही अच्छा हुआ कि आज इस समय तुम मेरे साथ हो और हम दोनों जो दिल में आये कर सकते हैं। इस समय हमें कोई रोकने वाला नहीं है।" इतना कह कर प्रतीभा ने मुझे चूम लिया। मैंने तब प्रतीभा को अपनी बाहों में भरते हुए उसको चूम लिया और धीरे से पूछा, "मेरे प्यारी प्रतीभा, हम लोग अभी क्या करने वाले हैं?" प्रतीभा फिर से मुझको चूमते हुए मेरी आँखों में आँखें डाल कर बोली, "हमलोग अब कुछ शरारत करने वाले हैं। हम लोग अभी जो शरारत करेंगे उसमे तुम्हें और मुझे दोनों को बहुत मज़ा आयेगा।" इतना कहने के बाद प्रतीभा का चेहरा शरम से लाल हो गया। थोड़ी देर तक चुप रहने के बाद प्रतीभा फिर बोली, "मुझे आज बहुत शरारत करनी है।"

मुझे लग रहा था कि अकेले कमरे में मेरे साथ होने से और ऊपर से मौसम भी रंगीन होने की वजह से प्रतीभा का मिज़ाज़ भी कुछ ज्यादा ही रंगीन हो गया है। मैं अब इस अवसर को खोना नहीं चाहता था और मैं चाह रहा था कि मैं अब प्रतीभा को चुदाई का असली मज़ा क्या होता है, समझा दूँ। मैं अब प्रतीभा से बोला, "डारलिंग प्रतीभा, लगता है कि अब हम लोगों को ज्यादा वक्त बर्बाद नहीं करना चाहिए। मैं अब तुम को तब तक नहीं छोड़ूँगा जब तक तुम मेरे लव-जूस का आखिरी कतरा निचोड़ ना लो। अब तुम्हें शरारती होने का पूरा मौक मिलेगा।" प्रतीभा मेरी बातों को सुन कर बेहद खुश हो गयी और मुझको अपनी बाहों में भर कर तीन-चार चूमे मेरे होठों पर दे दिये।

फिर प्रतीभा मेरे घुटने पर से उठ कर खड़ी हो गयी और अपने सर को नीचे करके मेरे बगल में खड़ी हो गयी, जैसे कि वो मुझे यह बताना चाहती हो कि अब वो मेरे हुक्म की गुलाम है और उसके साथ जो भी चाहूँ कर सकता हूँ। मैं भी तब प्रतीभा की देखा देखी अपनी सीट पर से उठ कर खड़ा हो गया और उसके सामने अपने बदन से अपना गाऊन उतार कर प्रतीभा के सामने बिल्कुल नंगा खड़ा हो गया। अब तक मेरा लंड आधा खड़ा हो गया था और धीरे धीरे झूल रहा था। यह देख कर पहले तो शरमा कर प्रतीभा का चेहरा लाल हो गया और फिर वो ललचाई आँखों से मेरे खड़े लंड को देखने लगी। अब तक मेरा लंड प्रतीभा की आँखों के सामने धीरे धीरे और खड़ा होकर काफी सख्त हो गया था।

मैंने अपना हाथ बढ़ा कर प्रतीभा की कमर में डाल दिया और उसे खींच कर कमरे में

रखे हुए ड्रेसिंग टेबल के सामने ले जकर प्रतीभा से बोला, "देखो तो सही हम लोग कैसे लग रहे हैं। शीशे में मुझे नंगा और उसपे मेरा खड़ा हुआ लंड और अपने आप को पूरे कपड़े पहने देख कर प्रतीभा पहले बहुत शरमाई फिर हँस कर वो मुझे कस कर अपनी बाहों में भींच कर मुझे चूमने लगी। थोड़ी देर तक मुझे चूमने के बाद प्रतीभा फिर से ड्रेसिंग टेबल के शीशे में देखने लगी और मैं अपना हाथ बढ़ा कर उसकी चूचियों से खेलने लगा। वो भी अपने हाथों को बढ़ा कर मेरे लंड को पकड़ कर सहलाने लगी। तब मैं प्रतीभा को अपनी बाहों में भर कर उसके कान में बोला, "डारलिंग अब मुझे तुम्हारे कपड़े उतारने हैं।" फिर उसके बाद मैंने प्रतीभा के गाऊन की कमर वाली डोरी को हल्के से खींच दिया। प्रतीभा मेरे काम में सहयोग कर रही थी लेकिन बहुत शरमा भी रही थी।

थोड़ी देर के बाद प्रतीभा मेरे सामने सिर्फ़ अपनी लाल रंग की ब्रा और लाल रंग की पैंटी और काले रंग के हाई हील्स के सैंडल पहने खड़ी थी। मैं अपनी आँखों के सामने एक अप्सरा को देख रहा था। मैंने धीरे से प्रतीभा को घूमा दिया जिससे कि मुझको उसके साईड और आगे और पीछे का रूप दिख सके। प्रतीभा अपने होठों को अपने दातों से दबा कर मंद-मंद मुस्कुरा रही थी और मेरी तरफ़ बुझी हुई आँखों से देख रही थी। थोड़ी देर बाद मैंने प्रतीभा की ब्रा को खोलना शूरू कर दिया। पहले मैंने ब्रा के हुक को खोला और फिर सामने आकर प्रतीभा की ब्रा के अंदर कैद दोनों चूचियों को देखने लगा। फिर मैंने प्रतीभा की बाहों से ब्रा के दोनों स्ट्रैप्स को धीरे धीरे उतार दिया और ब्रा प्रतीभा की बाहों से फिसल कर जमीन पर जा गिरी। अब प्रतीभा मेरे सामने सिर्फ़ एक लाल रंग की पैंटी और काले हाई हील्स के सैंडल पहन कर खड़ी थी। मैंने तब प्रतीभा को फिर से पकड़ कर ड्रेसिंग टेबल के सामने ले जा करके खड़ा कर दिया और बोला, "देखो अब कैसी लग रही हो।" प्रतीभा मेरी तरफ शरमाती हुए हँस करके बोली, "बहुत ही शैतान हो।"

मैं अब प्रतीभा के पीछे खड़ा हुआ था और अपने हाथों से उसकी पतली कमर को पकड़ रखा हुआ था। मैं प्रतीभा की गर्दन और कंधों पर धीरे धीरे चूम रहा था। प्रतीभा मेरे चूमने के साथ साथ काँप रही थी। थोड़ी देर के बाद प्रतीभा मुझसे बोली, "मेरे राजा, मैं भी तुम्हारी तरह शरारती हो सकती हूँ।" मैं प्रतीभा की बातों को सुन कर हँस पड़ा और फिर प्रतीभा के पीछे बैठ कर प्रतीभा की कमर चूमने लगा। थोड़ी देर के बाद मैं ड्रैसिंग टेबल के शीशे में देखते हुए एकाएक प्रतीभा की पैंटी खींच कर उसके सैंडलों के पास ले गया। प्रतीभा जैसे ही शीशे में अपने को नंगी देखी तो झट से

अपने हाथों से अपनी चूत को ढक ली और बोली, "ओह! डारलिंग क्या कर रहे हो? मुझे शरम आ रही है।" मैं तब प्रतीभा के नंगे चूत्तड़ों पर अपने हाथों को फेरता हुआ प्रतीभा से बोला, "डारलिंग प्रतीभा, तुम अपने पैरों को धीरे-धीरे एक के बाद एक करके ऊपर उठाओ।" प्रतीभा मेरे बातों को मानते हुए अपने पैरों को धीरे धीरे से ऊपर उथयी और मैंने उसकी पैंटी को पैरों से निकाल कर दूर पड़ी कुर्सी पर फेंक दिया। मैं फिर से अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ और प्रतीभा के कंधों के ऊपर से देखते हुए मैंने प्रतीभा की दोनों कलाईयों को पकड़ कर उसके हाथों को उसकी चूत पर से हटाया और उन हाथों को पीछे खींच लिया। अब प्रतीभा की साफ चिकनी चूत शीशे से होते हुए मेरी आँखों के सामने थी। मुझे प्रतीभा की साफ चिकनी चूत बहुत ही प्यारी लग रही थी।

अब मैं प्रतीभा के कानों के पास अपना मुँह ले जाकर धीरे से बोला, "डारलिंग अब तुम वाकई में शरारती लग रही हो।" प्रतीभा अपने आप को शीशे में बिल्कुल नंगी देख कर मारे शरम से लाल हो गयी। फिर उसकी आँखें अपनी नग्न सौंदर्य को देख कर चमक उठी और वो शरमाना छोड़ कर धीरे धीरे मुस्कुराने लगी। अब मैंने प्रतीभा को धीरे धीरे अपनी तरफ़ घूमा लिया और उसके नारंगी की फाँकों जैसे खूबसूरत होठों को चूमने लगा। प्रतीभा के होठों को चूमते ही मुझे लगा कि मैं शहद पी रहा हूँ। प्रतीभा भी मेरे गले में अपनी बाहों को डाल कर मेरे मुँह में अपनी जीभ डाल दी। हम दोनों में से कोई भी चूमना बंद नहीं करना चाह रहा था और दोनों एक दुसरे को जकड़े हुए अपनी पूरी ताकत से चूम रहे थे। प्रतीभा मुझसे इस कदर लिपटी थी कि मुझे अपनी छाती में प्रतीभा के निप्पल के गड़ने का एहसास हो रहा था। उसकी चूचियाँ भी अब सैक्स की गरमी से फूल गयी थीं। मेरा लंड भी अब बुरी तरह से अकड़ गया था और मुझे लंड की जड़ में हल्का हल्का सा दर्द होने लगा था।

Hindi Fonts By: SINSEX

मैंने प्रतीभा को चूमते हुए उसक एक हाथ पकड़ कर अपने लंड से लगा दिया। मेरे लंड पर प्रतीभा का हाथ छूते ही प्रतीभा गप से मेरा लंड पकड़ ली और खुश हो कर मुझसे बोली, "ओह! डीयर, तुम्हारा हथियार तो बहुत ही तगड़ा है। मेरे ख्याल से इसकी लंबाई ८ इन्च और मोटाई करीब ३ या ३-१/२ इन्च होगी। बहुत ही प्यारा है।" तब मैं प्रतीभा के गालों को चूमते हुए प्रतीभा से बोला, "प्रतीभा डारलिंग, मेरा लंड प्यारा है कि नहीं है मुझे नहीं मालूम। लेकिन तुम्हारी चिकनी जाँघों के बीच तुम्हरी गोरी चिकनी चूत बहुत ही रसीली और प्यारी है। मेरा यह लंड तुम्हारी चूत से मिलने के लिए बहुत ही बेताब है बेचारा। और हाँ, मेरे लंड की लंबाई और मोटाई को मत

नापो। यह आज तुम्हें इतना मज़ा देगा जिसकी तुमने कभी कल्पना भी नहीं की होगी।" फिर मैं प्रतीभा को धीरे धीरे बिस्तर के करीब ले आया और मैं खुद बिस्तर पर पीठ के बल लेट गया और अपने चूत्तड़ों के नीचे दो तकिये भी लगा दिये।

प्रतीभा मुझे फटी फटी आँखों से देख रही थी और कुछ सोच रही थी। मैं प्रतीभा से बोला, "आओ प्रतीभा डारलिंग, मेरे ऊपर बैठ कर सवारी करो। मेरे ऊपर बैठ कर मेरा यह लंड अपनी चूत में भर लो और चुदाई करो।" कुछ पल के बाद प्रतीभा को मेरी बातों का असर हुआ और वो झट से हाई हील्स के सैंडल पहने हुए ही बिस्तर पर चड़ कर मेरी कमर के दोनों तरफ़ अपने पैरों को करके मेरे ऊपर बैठ गयी। बैठने के बाद उसने थोड़ा सा अपनी चूत्तड़ों को उठाया और अपने हाथों से मेरा लंड पकड़ कर अपनी चूत से लगा दिया और फिर अपनी कमर चला कर मेरा लंड अपनी चूत में घुसेड़ लिया। मैंने तब प्रतीभा के चूत्तड़ों को पकड़ कर थोड़ा ऊपर उठाया और उसने फिर से एक धक्के के साथ मेरा लंड अपनी चूत में भर लिया। थोड़ी देर के बाद प्रतीभा मेरे ऊपर झुक गयी और मेरे होठों को चूमते हुए और मेरे सीने से अपनी भारी भारी चूचियों को दबाते हुए मुझे हल्के-हल्के धक्के के साथ चोदने लगी।

Hindi Fonts By:

थोड़ी देर तक मुझे चोदने के बाद प्रतीभा मेरे ऊपर लेट गयी। मैं तब नीचे से उसके नंगे चूत्तड़ों पर हाथ फेरते हुए उसके कान में धीरे से बोला, "डारलिंग, अब तुम्हारी चूत को मज़ा दिलवाना तुम्हारे हाथों में है। मैं तो बस चुप-चाप नीचे लेटा-लेटा तुम्हारी चूत के धक्के खाता रहूँगा। अब तुम्हीं मुझे अपने हिसाब से चोदती रहो और अपनी चूत को मेरा लंड खिलाती रहो।" इतना कह कर मैंने प्रतीभा की चूचियों को अपने हाथों में लेकर कस कर मसल दिया और अपनी कमर नीचे से उचका कर प्रतीभा की चूत में तीन-चार धक्के मार दिये। मेरी बातों को सुन कर प्रतीभा की आँखें एक बार चमक गयीं और मुझे चूमते हुए बोली, "मेरे चोदू राजा, मैं चाहे तुम्हें ऊपर से चोदूँ या तुम मेरे ऊपर चड़ कर मुझे चोदो, दोनों में कोई फ़रक नहीं है। हर हाल में मेरी चूत ही तुम्हारे लंड से चुदेगी।" उसके बाद प्रतीभा मुझे फिर से जकड़ कर पकड़ते हुए अपनी पतली कमर उठा-उठा कर मुझे चोदने लगी।

SINSEX

प्रतीभा मुझे फिरसे अपनी बाहों में भरते हुए मुझे चूम कर बोली, "ओह डारलिंग! बहुत मज़ा आ रहा है। हाय क्या लंड है तुम्हारा, मेरी चूत तो अंदर तक भर गयी है। हाय! मैं तो आज रात भर तुम्हारा लंड अपनी चूत के अंदर ही रखूँगी। तुम्हारा लंड मेरी चूत के लिए ही बनाया गया है।" फिर प्रतीभा मेरी आँखों में देखते हुए मेरे ऊपर तन

कर और अपनी कमर को कस कर मेरी कमर पर दबा करके बैठ गयी और प्रतीभा की नरम चूत और मेरी झांटें एक दुसरे से मिल गयी। अब प्रतीभा की साँस फूलने लगी थी और उसकी आँखें बंद होने लगी थी और उसकी चूची भी फूल गयी। अब वो मेरे लंड पर ज़ोरों से उठ–बैठ रही थी और उसके उठने बैठने के साथ साथ प्रतीभा की दोनों चूचीयाँ भी उछल रही थीं। मुझे लग रहा था कि प्रतीभा की चूत और ज्यादा देर तक मुझे चोद नहीं पायेगी और जल्दी ही अपन पानी छोड़ देगी। अब वो बहुत जोर जोर से उछल रही थी और बोल रही थी, "लो मेरे चोदू राजा, लो मेरी चूत के धक्के खाओ अपने लंड पर। लो अब मैं अपनी चूत का पानी छोड़ने वाली हूँ। लो सम्भालो अपने लंड को नहीं तो मेरी चूत के धक्कों से तुम्हारा लंड टूट जायेगा। हाय क्या मज़ा आ रहा है। तुम मुझे पहले क्यों नहीं मिले। अब तक मैं तुमको और कितनी बार चोद डालती।" इतना कहने के बाद प्रतीभा मुझे कस कर जकड़ ली और बहुत ज़ोरों के साथ काँप उठी और शाँत हो गयी। उसकी चूत के पानी से मेरा लंड और जाँघें पूरी की पूरी भीग गयी। मैं फिर भी प्रतीभा के नीचे चुप–चाप लेटा रहा और प्रतीभा को पूरी तरह से झड़ने दिया। थोड़ी देर के बाद प्रतीभा ने अपनी आँखें खोल दी और मुझे देख कर मुस्कुरा दी। तब मैंने अपने हाथों को प्रतीभा की पीठ पर ले जाकर पहले उसकी पीठ को सहलाया और फिर उसके चूत्तड़ों को सहलाना शूरू कर दिया। मैं प्रतीभा के चूत्तड़ों को सहलाते हुए कभी कभी उसकी गाँड के छेद को सहलात रहा। प्रतीभा ने धीरे से मेरे कँधों पर से अपना सर उठाया और मुझे अपनी आधी बंद आँखों से देखते हुए मुझे तीन चार चुम्मे दिए। मैंने प्रतीभा के चूत्तड़ों को सहलते हुए धीरे से कह, "रुकना मत, अभी तुम चालू रहो।" मेरी बात सुनते ही प्रतीभा की आँखें चमक उठी और मुझसे बोली, "क्या फिर से करोगे, मतलब क्या फिर से हम लोग चुदाई करेंगे?" मैंने अपनी गर्दन हिला कर प्रतीभा से हाँ कहा। "ओह डारलिंग," कह कर प्रतीभा मुझसे लिपट गयी और अपनी चूत से लंड को भींच लिया और फिर से मेरे लंड पर धीरे धीरे अपनी चूत को ऊपर नीचे करने लगी। अबकी बार मैंने प्रतीभा को कोई सहारा नहीं दिया और प्रतीभा बड़े आराम से मेरे लंड को अपनी चूत से कभी धीरे धीरे और कभी जोर जोर से चोदने लगी। मैं अपने हाथों से प्रतीभा की चूचियों को पकड़ कर दबाने लगा और कभी कभी जोर जोर मसलने लगा। थोड़ी देर ऐसे ही चुदाई के बाद प्रतीभा फिर से झड़ने की कगार पर पहूँच गयी और अब वो जोर जोर से मेरे लंड पर उछलते हुए बोली, "हाय राजा, क्या मज़ा मिल रहा है, लगता है कि आज मैं पागल हो जाऊँगी। तुमने आज मुझे पूरा का पूरा स्वर्ग का मज़ा दिया है। आज मैं अपनी चूत तुमसे चुदवा कर धन्य हो गयी और अब मुझे एक औरत होने का गर्व हो रहा है। ओह! ओह! हाय मैं झड़ रही हूँऊँ ऊँ ऊँ। आह! आह! और जोर से मेरीईईईईईईईई

Hindi Fonts By Sinsex

चू.....ची..... मसलो.....। ओह! ओह! हाँ..... मैं गयीईईईईईईई। "

प्रतीभा फिर शाँत हो कर मेरे ऊपर पड़ी रही। थोड़ी देर के बाद जब प्रतीभा की साँस वापस शाँत हुई, तो वो उसने मुझे चूमना शूरू कर दिया और अपनी चूत के झड़ने का एहसास अपने अंदर लेने लगी। ऐसे ही थोड़ी देर के बाद प्रतीभा ने फिर से मेरे लंड को अपनी चूत से ज़ोरदार झटकों के साथ चोदना शूरू कर दिया। प्रतीभा अबकी बार बहुत जोर जोर से मेरे लंड को अपनी चूत में लेकर उछल रही थी। उसकी दोनों चूचियाँ उसके उछलने के साथ झूल रही थी। मैंने तब प्रतीभा की दोनों चूचियों को छोड़ करके उसकी पतली कमर को अपने हाथों से पकड़ लिया और नीचे से मैं भी अपनी कमर उठा–उठा कर प्रतीभा की चूत के अंदर अपना लंड पेलने लगा। इस समय हम दोनों को दुनिया से कोई मतलब नहीं था और बस एक दुसरे को कस कर पकड़ कर चुदाई कर रहे थे।

थोड़ी देर के बाद मैंने नीचे से अपनी कमर उठा कर प्रतीभा की चूत में अपना सारा का सारा लंड घुसेड़ कर प्रतीभा को कस कर पकड़ लिया और बोला, "ओह! ओह! प्रतीभा डारलिंग, लो, लो अपनी चूत को अपने हाथों से खोलो। मैं अब तुम्हरी प्यारी चूत को अपने लंड के पानी से पूरा का पूरा भरने वाला हूँ। ले, ले चुदक्कड़ प्रतीभा ले मेरा लंड का पानी अपनी चूत से पी ले।" इतना कहने के बाद मैं प्रतीभा की चूत के अंदर झड़ गया और प्रतीभा की चूत ने भी मेरे साथ साथ अपना पानी छोड़ दिया। प्रतीभा की चूत अब तीसरी या चौथी बार झड़ी थी और अबकी उसने पानी बहुत ज्यादा छोड़ा था। जब प्रतीभा की साँस कुछ ठीक हुई तो वो मेरे लंड के ऊपर से उठ गयी और मुझसे बोली, "वह मेरे राजा, तुमने तो आज मुझे पूरा का पूरा स्वर्ग का आनन्द दिया। अब तुम चुप चप लेटे रहो और मैं अभी पीने के लिये कुछ आर्डर करती हूँ। क्या पसंद करोगे... रम या स्कॉच" मैंने कहा स्कॉच। फिर उसने फोन करके एक स्कॉच की बॉटल और ग्लास, बर्फ इत्यादी का आर्डर दिया और इतना बोल कर प्रतीभा हाई हील्स के सैंडलों में अपने चूत्तड़ मटकाती हुई कमरे के बाहर बाथरूम में चली गयी।

मैं प्रतीभा का कहा मान के चुप–चाप बिस्तर पर ही लेटा रहा और आज शाम से जो जो घटनायें हुई उनके बारे में सोचने लगा। मैं जितना सोचता उतना ही लगता कि आज की रात कभी खतम ना हो और मैं जी भर के प्रतीभा को चोदता रहूँ। मैं यह भी सोच रहा था की अब आगे क्या करना चाहिए। मैं यही सब सोच रहा था कि दरवाज़े पर बेल

बजी। वेटर आर्डर ले कर आया होगा, यह सोच कर मैंने उठ कर एक टॉवल बाँधा और दरवाज़ा खोल कर वहीं से वेटर से ट्रे ले ली। इतने में प्रतीभा भी वापस आ गयी और मेरी बगल में आ कर बैठ गयी और ड्रिंक बनाने लगी। उसके बाद हम दोनों अगल बगल सट कर बैठ गये चीयर्स बोल कर ड्रिंक पीने लगे। प्रतीभा ने अपनी एक टाँग मेरी टाँग पर रख दी और हँसते हुए बोली, "राजा, आज तो तुमने मुझे स्वर्ग का पूरा पूरा आनन्द दिया।" फिर वो एक बड़ा घूँट पी कर मेरे कनों में बोली, "राजा तुम्हारी चुदाई से आज मैं एक साथ तीन तीन बार लगातार झड़ी हूँ। शादी के बाद से ऐसा कभी नहीं हुआ था। या तो तुम में या तुम्हारे लंड में कोई जादू है।" मैं प्रतीभा की बातों को सुन कर हँस पड़ा और फिर उसको चूमते हुए बोला, "मुझे पता है कि यह तुम्हारी किसी मर्द के ऊपर चड़ कर पहली बार चुदाई करना नहीं था, क्योंकि तुम अपनी चूत से बहुत ही सधे हुए धक्के मेरे लंड पर मार रही थी। और हाँ अभी तुमने बोला कि शादी के बाद तुम कभी लगातार तीन तीन बार नहीं झड़ी, इसका मतलब तुम शादी के पहले एक साथ तीन तीन बार झड़ी हो?" मेरे बात सुन कर प्रतीभा शरम से लाल हो गयी और अपना ड्रिंक पीते हुए बोली, "छोड़ो ना यह बात। फिर कभी सुनना मेरी शादी के पहले वली बातें और इतना बोल प्रतीभा अपना पूरा ड्रिंक गटक गयी और अपने लिये दूसरा पैग बनाने लगी। मैं फिर मुस्कुरते हुए प्रतीभा से बोला, "ठीक है, लेकिन अब यह बताओ कि तुम्हारा और चुदाई का प्रोग्राम है या फिर इतनी जल्दी-जल्दी ड्रिंक पी कर नशे में धुत्त होने का इरादा है। प्रतीभा अपना दूसरा पैग पीते हुए बोली, डर्लिंग, घबराओ नहीं, मैं इसलिए जल्दी-जल्दी पी रही हूं ताकि जल्दी से सूरूर और मस्ती चढ़ जाये बदन में और मैं और भी ज्यादा खुल कर चुदाई का मज़ा ले सकूँ । मैंने पूछा, तुम्हारे पास अब और कोई शरारत बची है कि नहीं? तब वोह मुझे आँख मारते हुए बोली, "राजा, मैं तुम्हारा लंड धीरे धीरे खड़ा होता देखना चाहती हूँ? मुझे इसका धीरे धीरे खड़ा होना देखने में बहुत अच्छा लगता है।" मैं तब प्रतीभा कि नंगी जाँघों पर हाथ फेरते हुए बोला, "जरूर मेरे रानी। आज के लिए मेरा लंड तुम्हारा है। तुम इससे जैसे चाहो खेल सकती हो। तुम चाहो तो इसको अपने हाथों से खड़ा कर सकती हो या फिर इसे अपने मुँह में लेकर चूस-चूस कर खड़ा कर सकती हो।" प्रतीभा मेरी बात सुन कर अपना बचा हुआ दूसरा ड्रिंक भी एक घूँट में पी गयी और मुझसे बोली, "हाय मेरे राजा! तुमने अभी अभी जो कुछ भी बोला, मैं वो सब का सब करना चाहती हूँ।" फिर उसने अपना हाथ बढ़ा कर मेरे लंड को पकड़ लिया और गौर से देखने लगी। थोड़ी देर देखने के बाद बोली, "मैं अब तुम्हारे लंड को ठीक से देखी हूँ। पहले तो मौका ही नहीं मिला ठीक से देखने के लिए" इतना बोल कर प्रतीभा जोर से हँस पड़ी। फिर मेरे लंड को देखते हुए प्रतीभा मुझसे बोली, “पहले तो मैं इस

Hindi Fonts By: SINSEX

चोदू लंड को नहलाऊँगी।" मैं कुछ समझा नहीं और चौंक कर पूछा "क्या?" वोह मुझे देख कर फिर से खिल-खिला कर हँस दी। फिर आँख मार कर अपने ग्लास में स्कॉच डालने लगी। प्रतीभा की आँखों और हरकतों से साफ लग रहा था कि वोह अब थोड़ी नशे में थी। फिर वोह झुक कर मेरी टाँगों के बीच में अपना ग्लास ले आयी और मेरे लंड को उसमें डुबो दिया और हंसते हुए बोली, "इससे इसका शाही स्नान हो जायेगा और शायद इसे भी थोड़ा नशा चड़ जाये।" फिर वोह अपनी उंगलियों से मेरे लंड को स्कॉच में डुबो कर रगड़ने लगी। मेरा लंड भी स्कॉच के फील और प्रतीभा की उँगलियों के टटोलने के कारण उत्तेजित होने लगा। प्रतीभा फिर से खिलखिला कर हँसते हुए बोली "लगता है कि तुम्हारे लंड में अभी कफ़ी दम-खम है और तुम अभी भी शरारत करने के लिए तैयार हो।" फिर मेरे लंड को ग्लास से बाहर निकाल कर बोली, चलो अब तुम ठीक तरीके से बेड पर लेट जाओ।" और फिर मेरे लंड को अपनी उंगलियों से पोंछ कर वही ड्रिंक गटा-गट पी गयी और बोली "इसे कहते हैं पुरुशत्व का स्वाद।" फिर मैंने भी अपना ड्रिंक खतम किया और हम दोनों बेड पर आ गये। मैं हैरान था की इतनी ड्रिंक करने के बाद भी वोह कुछ भी करने की हालत में कैसे थी। जरूर प्रतीभा को पीने की आदत होगी क्योंकी वोह अभी नशे में तो जरूर थी पर उसने जितनी पी थी उसके मूकाबले वोह नशा ज्यादा नहीं था। बेड तक चलते हुए भी उसके कदम उन हाई हील सैंडलों के बावजूद भी थोड़े ही लड़खड़ाये थे।

मैं बिस्तर के ठीक बीचो बीच लेट गया और फिर प्रतीभा एक झटके के साथ मेरे ऊपर आ कर मेरी छाती पर बैठ गयी। अब उसका मुँह मेरे पैरों की तरफ था। मेरे ऊपर बैठ करके प्रतीभा कुछ देर तक मेरे लंड से खेलती रही और फिर वो मेरे लंड पे झुक गयी। अब प्रतीभा का मुँह मेरे लौड़े पर था और मेरे मुँह के पास उसकी चूत थी। प्रतीभा थोड़ी देर और मेरे लौड़े और मेरे आँडों के साथ खेलती रही और फिर मुझसे बोली, "राजा, अब तुम मेरी चूत को चाटो और मैं भी तुम्हारे लंड को अच्छी तरह से देख लूँगी और उसका स्वाद भी ले लूँगी। ठीक है ना?" मैं प्रतीभा की नंगी चूत्तड़ों को सहलाते हुए बोला, "मेरी रानी, तुमने तो मेरे मन की बात बोल दी। मैं सोच ही रहा था कि जो चूत चोदने में इतना मज़ा आए उसका रस कितना मीठा होगा। मैं तो कब से तुम्हारी रसीली चूत के रस का स्वाद लेना चाहता हूँ।" प्रतीभा मेरी बात को सुन कर बहुत खुश हो गयी और अपने आप को मेरे ऊपर ठीक से सैट करने के बाद उसने मेरे लंड को अपने हाथों में ले लिया। थोड़ी देर तक प्रतीभा मेरे लंड के सुपाड़े को खोल और बँद कर रही थी। बीच बीच में वो सुपाड़े को चूम भी रही थी। थोड़ी देर के बाद

HINDI FONTS BY SINSEX

प्रतीभा ने अपना मुँह खोल कर मेरे सुपाड़े को मुँह के अंदर कर लिया और हल्के हल्के चूसना शूरू कर दिया। थोड़ी देर के बाद प्रतीभा मेरे लंड को जोर जोर से चूसने लगी और कभी कभी वो मेरे लंड को अपने मुँह से निकाल कर अपनी जीभ से चाटने भी लगती थी। प्रतीभा कभी कभी मेरे सुपाड़े को अपनी आँखों से लगाती या फिर उसे अपने मुँह से निकाल कर अपने गालों पर रगड़ती। मुझे ऐसा लग रहा था कि जैसे प्रतीभा को कोई अच्छा सा खिलौना मिल गया हो। कभी कभी प्रतीभा मेरी झाँटों से भी खेल रही थी।

थोड़ी देर के बाद मैंने पलंग के पैरों के पास शीशे में देखा तो पाया कि प्रतीभा मेरा लंड अपनी आँखों के सामने रख कर मँद मँद मुस्कुरा रही है। ऐसा लग रहा था कि जैसे प्रतीभा के दिमाग के अंदर कुछ हलचल मची हुई हो। लेकिन प्रतीभा मेरे लंड को पकड़ कर मुस्कुराती रही। थोड़ी देर के बाद फिर से मेरे लौड़े को पकड़ कर अपने मुँह में घुसेड़ लिया और जोर जोर से चूसने लगी। प्रतीभा जैसे जैसे मेरे लंड को चूस रही थी उसके मुँह से घुटी घुटी आवाज़ निकल रही थी। तब मैंने अपने हाथों से प्रतीभा की चूत को खोल कर उसकी खुली चूत पर एक लम्बा चुम्मा जड़ दिया। मेरे चुम्मे के साथ ही प्रतीभा का शरीर एक बार फिर से काँप उठा।

मैंने तब अपनी जीभ निकाल कर प्रतीभा की चूत को ऊपर से चाटना शूरू किया और धीरे धीरे अपनी जीभ को प्रतीभा की चूत के अंदर डालना चलू किया। मेरी जीभ जैसे ही प्रतीभा की चूत के अंदर गयी तो प्रतीभा ओह! ओह! आह! आह! कर उठी और वो बोलने लगी, "हाय मेरे राजा चूसो, चूसो मेरी चूत को। बहुत अच्छा लग रहा है। वाकय में किसी भी औरत को कैसे खुश किया जाता है, तुम बहुत अच्छी तरह से जानते हो। हाय मुझे तो नशा सा छा रहा है।" इतना बोल कर प्रतीभा फिर से मेरे लौड़े को अपने मुँह में डाल कर चूसने लगी। अब तक चुसाई से प्रतीभा की चूत ने मीठा मीठा पानी छोड़ना शूरू कर दिया था और मैं अपनी जीभ से प्रतीभा की चूत खूब जोर जोर से चाट रहा था और चूस रहा था। अब मेरे लंड का सुपाड़ा बहुत फ़ूल गया था और उसको प्रतीभा अपने मुँह के अंदर डालने में कुछ दिक्कत महसूस कर रही थी और इसलिए वो लंड को अपने हाथ से पकड़ कर चाट रही थी।

प्रतीभा भी मानो पगला गयी थी और जोर जोर से मेरे मुँह पर अपनी चूत रगड़ने लगी और बोली, "हाय मेरे चोदू राजा, क्या कर रहे हो। इताना धीरे धीरे क्यों चाट रहे हो मेरी चूत को? जोर जोर से चाटो ना मेरी चूत। देखो उसमें से कितन ढेर सारा रस

रिस–रिस कर निकल रहा है। मेरी चूत में अपनी जीभ घुसा कर चूसो मेरी चूत को।" अब मैं भी गरम हो गया था और प्रतीभा से बोला, "हाय, मेरी चुदकाड़ रानी, क्या चूत है तुम्हारी। मन करता है जैसे कि इसको कचा ही चबा जाऊँ। बहुत ही रसीली चूत है तेरी। इतना रस कहाँ छुपा कर रखती है अपनी चूत के अंदर? मुझे तेरी चूत देख कर लग रहा है कि अब तक तू ठीक तरीके से चुदी नहीं है। तेरी चूत अभी पूरी की पूरी खुली नहीं है।" मेरे बात सुन कर प्रतीभा अपने मुँह से मेरे लंड को निकालते हुए बोली, "हाय मेरे चोदू, तुमने ठीक ही कहा है। क्या करूँ मेरे पती का लंड बहुत छोटा है और वो चूत में घुसते ही झड़ जाता है। आज तू मेरी चूत को चोद चोद कर उसका भुर्ता बना दे। मेरी चूत को अपने लंड के धक्कों से भोंसड़ा बना दे। हाय, क्या मस्त कर दिया है तूने मुझे। तेरी बीवी तुझसे बहुत खुश रहती होगी और क्यों ना हो, रोज रात को तेरे लंड से उसकी चूत खूब चुदती है।" इतना बोलने के बाद प्रतीभा ने फिर से मेरा लंड अपने मुँह में भर कर चूसना शूरू कर दिया। अब इतना तन कर अकड़ रहा था कि लंड में दर्द सा होने लगा। मैं तब प्रतीभा से बोला, "ओह मेरी रानी, तेरा खेल खतम हो गया हो तो अब मैं तुझे फिर चोदना चाहता हूँ। अब चलो मेरी बगल में अपने पैरों को फैला कर लेटा जा और मैं तेरे ऊपर चढ़ कर तुझे चोदता हूँ।"

Hindi Fonts By:

"नहीं अभी नहीं, मुझे अभी और थोड़ी देर तक तेर लंड चूसना है। मुझे लंड चूसने में बहुत मज़ा आ रहा है, प्लीज़ थोड़ी देर और रुको ना?" प्रतीभा मुझसे बोली। मैं तब प्रतीभा से बोला, "अरे मेरी चुदासी रानी, मान जा। नहीं तो मैं तेरे मुँह में ही झड़ जाऊँगा और तेरी चूत प्यासी रहा जायेगी। चल अब उठ और मुझे अपनी चूत के अंदर अपना लंड डाल कर चोदने दे।" तब प्रतीभा मेरे ऊपर से उठते हुए बोली, "ठीक है, अभी तू मुझे चोद ले, लेकिन अगली बार मैं तेरे लंड को खूब चूसूँगी और तेरा लंड पीऊँगी, समझा मेरे राजा?"

SIINSEX

अब प्रतीभा मेरी बगल में अपनी पीठ के बल लेट गयी और अपने पैरों को फैला कर अपने हाथों से पकड़ लिया और बोली, "अब आ न साले, क्यों देर लगा रहा है? अभी तो बहुत चुदास चड़ी थी अब क्या हो गया है? देख मैं अपनी चूत खोल कर लेटी हुई हूँ, अब आ और मुझे रगड़ कर एक रंडी के तरह चोद।" मैं प्रतीभा की चुदास को देख कर बहुत गरम हो गया और प्रतीभा से बोला, "रुक मेरी छिनाल रानी, अभी मैं तेरी चूत को अपने लंड से चोद चोद कर भोंसड़ा बनाता हूँ। आज तेरी चूत की खैर नहीं। आज तेरी चूत इतनी चुदेगी कि कल सुबह तू ठीक से चल नहीं पाएगी और तब तुझे देख कर सारे के सारे लोग समझ जायेंगे कि तेरी चूत में कोई लम्बा और मोटा

लंड खूब पेला गया है।" प्रतीभा मेरी बातों को सुन कर बोली, "अरे यार कल की कल देखी जायेगी, आज तो मुझे जी भर कर अपनी चूत चुदवाने दे। चल अब ज्यादा बातें नहीं। अब जो भी बात करनी है मेरे ऊपर चड़ कर अपने लंड से मेरी चूत से कह।" इतना सुनने के बाद मैं झटसे प्रतीभा के ऊपर चड़ गया और अपने दोनों हाथों से उसकी दोनों चूचियों को पकड़ कर मसलते हुए प्रतीभा से बोला, "अरे मेरे लंड की रानी, ज़रा अपने नज़ूक हाथों से मेरे लंड को अपनी चूत से भिड़ा दे, प्लीज़।" मेरी बात सुन कर प्रतीभा ने मेरे लंड को अपने हाथों से पकड़ा और अपनी चूत से भिड़ा दिया और बोली, "ले मेरी चूत के राजा, अभी तू जो भी बोलेगा मुझे सब मँज़ूर है, बस जल्दी से मेरी चूत में अपना लंड पेल कर मुझे रगड़–रगड़ कर चोद और चोद और सिर्फ चोद। जब तक मैं चिल्ला–चिल्ला कर रुकने के लिये न कहूँ तु मुझे बस चोद।"

अब मैं भी चुप ना रहा और जैसे ही प्रतीभा ने मेरे लंड को अपनी चूत से लगाया, मैंने अपनी कमर को एक झटके के साथ हिला कर उसकी चूत में अपना लंड पूरा जड़ तक पेल दिया। प्रतीभा एका–एक चिल्ला उठी, "हाय! मार डाला तूने। यह क्या किसी रंडी की चूत है जो एक साथ पूरा का पूरा लंड घुसेड़ दिया। ज़रा धीरे धीरे चोद ना, मैं कोई भागी जा रही हूँ क्या?" मैं तब धीरे धीरे धक्का मारते हुए बोला, "माना कि यह कोई रंडी की चूत नहीं है, लेकिन यह एक छिनाल की चूत तो है, जो अपने पती के अलावा दूसरे मर्द से अपनी चूत चुदवा रही है।" मेरी बात सुन कर प्रतीभा तिलमिला उठी और मुझ से बोली, "अरे अगर मैं छिनाल हूँ तो तू क्या है? तू भी तो अपनी बीवी की चूत छोड़ कर दूसरी औरत की चूत में लंड दिये पड़ा है? अच्छा चलो हम दोनो ही गंदे हैं और हम लोगोन को अपना गंदा काम भी पूरा कर लेना चाहिए।" तब मैं भी प्रतीभा की बातों को मान कर उसको अपनी कमर चला चला कर चोदने लगा और अपने दोनों हाथों से उसकी चूचियों को मसलने लगा। मेरी चुदाई से प्रतीभा की चूत और गीली हो गयी और वो ओह! ओह! आह! आह! करने लगी और नीचे से अपनी कमर उठा उठा कर अपनी चूत को मेरे लंड से चुदवाने लगी। थोड़ी देर नीचे लेटा कर चूत चुदवाने के बाद प्रतीभा बोली, "हाय मेरी चूत के राजा, बड़ा मज़ा आ रहा है। ज़रा और थोड़ा तेज तेज धक्के मार, नहीं तो मेरी चूत की चीटियाँ नहीं जायेंगी। ओह! ओह! हाँ! हाँ! ऊईईईईईईईईईईईईईई आँहहहहह्हहहहहह ऐसे ही आने दे अपना लंड मेरी चूत के अंदर तक। जब तक लंड अंदर जा कर बच्चेदानी पर ठोकर ना मारे तो चूत चुदवाने वाली को पूरा मज़ा नहीं आता।" मैं भी प्रतीभा की बातों को मान कर जोर जोर धक्कों के साथ चोदने लगा। थोड़ी देर ऐसे तेजी के साथ चोदने के बाद मैं

Hindi Fonts By: SINSEX

प्रतीभा से पूछा, "क्यों मेरी जानेमन, अच्छा लग रहे हैं मेरे लंड के धक्के। कैसा लग रहा है तेरी चूत को? क्या तेरा पती भी तुझे ऐसे ही चोदता है रोज रात और दिन में?" मेरी बात सुन कर प्रतीभा मुस्कुरा दी और बोली, "हाय मेरे चोदु राजा, बहुत मज़ा आ रहा है। सच पूछो तो आज मेरी चूत पूरे तरीके से और कायदे से चूदी है। हाँ तूने मेरे आदमी के बारे में पूछा, तो वो साला बिल्कुल गाँडु है। वो तो साला बीवी की चूत छोड़ कर नौकरों से अपनी गाँड मरवाता है या उनकी गाँड में अपना लंड पेलता है। उस साले मादरचोद को क्या मालूम चूत क्या होती है और उसकी चुदाई कैसे की जती है। अच्छा अब बहुत बातें हो गयी हैं, अब ज़रा मन लगा कर मेरी चूत में अपना लंड जोर जोर से पेल। मैं झड़ने वाली हूँ।"

मैं तब जोर जोर से प्रतीभा की चूत में अपना लंड पेलने लगा और फिर प्रतीभा को चूम कर मैंने उससे पूछा, "मेरी जान, मुझे एक बात समझ में नहीं आयी, वोह यह कि जितना तेरी चूत शानदार है उतनी हे तेरी ज़ुबान गंदी है। कहाँ से सीखी इतनी गंदी गंदी गालियाँ?" प्रतीभा तब नीचे से अपनी कमर उठा उठा कर मेरे लंड को अपनी चूत में पिलवाते हुए बोली, "अरे छोड़ भी अब, यह सब बातें बाद में सुनना। अब तो बस थोड़ी देर मेरे को रगड़ कर चोद। बस अभी कोई बात नहीं, मैं झड़ने वाली हूँ।" "ठीक है, फिर सम्भाल अपनी चूत को और देख मैं तेरी चूत का क्या हाल बनाता हूँ" और मैं पिल पड़ा प्रतीभा की चूत में।

Hindi Fonts By:
SINSEX

थोड़ी देर के बाद मुझे भी लगा कि अब ज्यादा देर रुक नहीं सकता और इसलिए मैंने अपना लंड एक बार जड़ तक प्रतीभा की चूत में पेल कर उसकी एक चूची अपने मुँह में भर ली। तब प्रतीभा बोली, "क्या हुआ रुक क्यों गया साले? ५-६ धक्के और मार देता तो मेरी चूत झड़ जाती। तू मुझे चोदते चोदते थक गया क्या?" मैं तब प्रतीभा की चूची को अपने मुँह से निकालते हुए बोला, "अरे यार समझती नहीं क्या? मुझे लगा कि मेरा लंड अपना पानी छोड़ने वाला है और इसलिए मैंने तेरी चूत की चुदाई थोड़ी देर के लिए रोक दी ताकि लंड का जोश थोड़ा ठंडा हो जाये और मैं तुझे देर तक चोद सकूँ।" तब प्रतीभा मेरे होठों को चूमते हुए बोली, "वाह मेरे चोदू राजा, औरतों को चोदना कोई तुझसे सीखे। किसी औरत को कैसे चुदाई से ज्यादा से ज्यादा मज़ा मिले वोह तुझे सब पता है। काश मेरे गाँडु पती देव को भी यह सब मालूम होता तो मेरी चूत की यह हालत नहीं होती।" मैंने अब फिर से प्रतीभा को चोदते हुए पूछा, "क्यों क्या हुआ तेरी चूत को। तेरी चूत बहुत ही मस्त है और देख ना कैसे अपना मुँह खोल कर मेरा लंड गपा गप खा रही है।" तब प्रतीभा नीचे से अपनी चूतड़ उचकाते

हुए बोली, "हाँ मेरे चोदू राजा, जब तू अपना लंड मेरी चूत को खिला रहा है तो मेरी चूत को क्या एतराज़ है तेरा लंड खाने में? वैसे तू चोदने में बहुत ही माहिर है। तेरा लंड खा खा कर मेरी चूत इस समय बहुत ही मस्त हो गयी है और मैं खुद को बहुत हल्की हल्की महसूस कर रही हूँ। वाह क्या धक्के मार रहा है तू, तेरा लंड बिल्कुल मेरी चूत की जड़ तक पहूँच रहा है और मुझे दिवानी बना रहा है। हाय ऐसे ही चोदता रह, रुक मत, रात भर चोद मुझे। पता नहीं कल ऐसी चुदाई का मौका मिले या ना मिले।"

मैंने तब प्रतीभा को जोर जोर धक्कों से चोदते-चोदते हुए कहा, "यार मेरी जान, तू है तो बहुत सैक्सी और मुझे लग रहा है कि दिन में कम से कम एक बार बिना चुदवाए तुझे रात को नींद नहीं आती होगी। बता ना तू उर कितने लंड अपनी चूत में पिलवा चुकी है? वैसे जब तेरे पती को गाँड मरवाने और मारने का शौक है तब तू भी क्यों नहीं अपनी गाँड में अपने पती का लंड लेती है। ऊससे कम से कम तेरा पती गाँड मारने के लिए घर के बाहर नहीं जयेगा।" मेरी बातों को सुन कर प्रतीभा पहले तो मुस्कुरा दी और फिर बोली, "वाह रे मेरी चूत के राजा, अगर मैं भी अपनी गाँड मरवाती तो क्या तू मुझे ऐसे अपने कमरे में नंगी लिटा कर अपने लंड से मेरी चूत चोद पाता? मैं भी इस समय अपने पती का या अपने घर के किसी नौकर का लंड अपनी गाँड में लेकर सो रही होती। वैसे मुझे गाँड मरवाने का कोई शौक नहीं है, मुझे गाँड मरवाने में घिन सी लगती है। और जब मेरे पास मरवाने के लिए चूत है तो मैं क्यों गाँड में लंड डलवाऊँ? असल में बात यह है कि तुम सब मर्द एक जैसे हो। जो चीज़ मिल रही है उसकी कोई कद्र नहीं और जो चीज़ नहीं मिलती तो उसके लिए दिवाने रहते हो। चलो हटो मेरे ऊपर से मुझे अब नहीं चुदवाना तुझसे। निकाल अपना लंड मेरी चूत से, मुझे जाने दे।"

मैंने तब प्रतीभा को अपनी बाहों में लेते हुए और उसकी चूची पर चुम्मा देते हुए ५-६ ज़ोरदार धक्के मारे और बोला, "अरे प्रतीभा रानी, क्यों नाराज़ हो रही हो? मैं तुमसे मज़ाक कर रहा था। अरे तुम्हारी अपनी चूत और गाँड है। तुम जिसमें चाहो लंड डलवाओ, मुझे तो बस इस समय चोदने दो। मुझको इस समय रोको मत।" तब प्रतीभा अपनी कमर उचकाते हुए बोली, "अरे चोद न मादरचोद, मैं कब मना कर रही हूँ। बस तू मुझसे गाँड मरवाने की बात मत कर, चूत में चाहे जितना मरज़ी लंड पेल, रात भर चूत में लंड डाले पड़े रह, मुझे कोई एतराज़ नहीं। वैसे अब जर जोर जोर से धक्के मार, मैं झड़ने वाली हूँ।" मैं तब प्रतीभा की चूचियों को अपने हाथों में पकड़ कर अपनी कमर झटकों के साथ हिला हिला कर प्रतीभा को चोदने लगा। प्रतीभा भी अपने

दोनों पैरों को मेरी कमर पर डाल कर अपने चूत्तड़ों को उछाल उछाल कर मेरे लंड के धक्को का जवाब देने लगी और बोली, "चोद, चोद मेरे चोदू राजा, और जोर से पेल मेरी चूत में अपना लंड। आज मेरी चूत को फाड़ डाल, चूत के चिथड़े उड़ा दे, लेकिन मेरी चूत की कसम अभी रुकना मत, बस ऐसे ही पेलते रह मुझे। बहुत मज़ा आ रहा है। हाय क्या चोदता है तू। तू धक्के मेरी चूत में मर रहा है, और शॉट मेरे दिल तक पहूँच रहा है। हाय हाय मैं झड़ रही हूँऊँऊँ। पे.....ल और ते.....ज़ ते.....ज़ पे.....ल अपना ल.....ंड हाय मैं गयीईईईई! हाय चो.....द, रु.....कना न.....हिं.....। ओह! ओह! हा! हा...आय! वाह वाह मेरी चो.....त को फा.....ड डा.....ल।" और प्रतीभा झड़ गयी। तब मैं तेज़ तेज़ धक्के मार कर अपना लंड पूरा का पूरा प्रतीभा की चूत में डाल कर लंड के पानी से प्रतीभा की चूत को भर दिया। मेरे झड़ने के साथ साथ प्रतीभा एक बार फिर से झड़ गयी और मुझसे लिपट गयी और मुझे चूमने लगी।

मैं तब प्रतीभा के ऊपर से नीचे उतरा और प्रतीभा की चूचियों से खेलने लगा। प्रतीभा मुझे रोकते हुए बोली, "रुको मेरे राजा, मुझे टॉयलेट जाना है।" "क्यों टॉयलेट क्यों जाना है?" मैंने प्रतीभा की चूची को दबाते हुए पूछा। प्रतीभा तब मेरे मुरझाए हुए लंड को पकड़ कर हिलाते हुए बोली, "टॉयलेट क्यों जाया जाता है? यह भी नहीं मालुम?" मैंने भी मज़ाक मज़ाक में बोला, "नहीं मालुम कि तुम क्यों टॉयलेट जाना चाहती हो।" तब प्रतीभा बोली, "अरे मुझे पेशाब लगी है और मुझे टॉयलेट में जा कर पेशाब करना है। समझा मेरे चोदू राजा?" तब मैं प्रतीभा की चूचियों कि जोर से दबाते हुए बोला, "तो ऐसे बोलो ना कि तुम्हें टॉयलेट जा कर अपनी चूत से सीटी बजानी है। मुझे चूत की सीटी सुनना बहुत अच्छा लगता है। मैं जब छोटा था तो अक्सर मैं बाथरूम के बाहर छिप कर अपनी माँ और बहन की चूत की सीटी सुनता था। चलो आज मैं तुम्हारे सामने बैठ कर तुम्हारी चूत की सीटी सुनूँगा।" प्रतीभा मेरी बातों को सुन कर खिलखिला कर हँस दी और बोली, "धात! ऐसा भी कहीं होता है? मुझे तेरे सामने बैठ कर पेशाब करने में बहुत शरम लगेगी और फिर तू मेरे सामने बैठेगा तो मुझे पेशाब ही नहीं होगी। तुझे मेरी चूत की सीटी सुननी है तो टॉयलेट के बाहर खड़े हो कर सुन।" मैं तब ज़िद करते हुए बोला, "क्यों नहीं हो सकता है? तुम जब शाम से अब–तक मेरे सामने नंगी लेट कर अपनी चूत मेरे लंड से चुदवा सकती हो और अब तुझे मेरे सामने बैठ कर अपनी नंगी चूत से पेशाब करने में शरम आयेगी? तुम मेरे सामने बैठ कर पेशाब क्यों नहीं कर सकती? नहीं आज तो मैं तुम्हारे सामने बैठ कर तुम्हारी चूत से पेशाब निकलते देखना चाहता हूँ।"

मेरी बातों को सुन कर प्रतीभा बोली, "तुम बहुत ज़िद्दी हो। चल आज मैं तुझे अपनी चूत से पेशाब निकलते हुए दिखलाती हूँ और साथ साथ अपनी चूत से निकलता हुआ पेशाब पिलती भी हूँ। चल मेरे साथ टॉयलेट चल।" इतना कह कर प्रतीभा पलँग से उठ कर नीचे खड़ी हो गयी और नंगी ही टॉयलेट की तरफ चलने लगी। उसका नशा अभी भी बरकरार था क्योंकि प्रतीभा की चाल में अभी भी थोड़ी लड़खड़ाहट थी पर उसके हाई हील्स सैंडलों में उसकी नशीली चाल बहुत मस्त लग रही थी। मैं भी प्रतीभा के गोल गोल चूत्तड़ों पर हाथ फेरते हुए प्रतीभा के पीछे पीछे टॉयलेट चला गया। टॉयलेट में पहूँच कर पहले प्रतीभा ने अपना चेहरा धोया और एक तौलिया भीगो कर अपने पूरे बदन को पोंछा। फिर वोह मेरी तरफ़ देखकर बोली, "हाँ अब बोलो क्या तुम्हे मेरी चूत की सीटी सुननी है और क्या तुम्हे मेरी चूत से पेशाब निकलते हुए देखना है?" मैंने जब हाँ किया तो प्रतीभा बोली, "चलो टॉयलेट के फ़र्श पर लेटा जाओ।" मैं चुप चाप टॉयलेट के फ़र्श पर लेटा गया। तब प्रतीभा मेरे मुँह के पास अपनी चूत रख कर मेरे सीने के ऊपर अपनी चूत्तड़ रख कर बैठ गयी। बैठने के बाद प्रतीभा ने एक बर झुक कर मुझे चूमा और फिर मेरा सर अपने दोनों हाथों से पकड़ कर अपनी चूत से पेशाब की धार छोड़ दी। प्रतीभा की चूत से निकलती धार ठीक मेरे मुँह पर गिर रही थी और प्रतीभा ने मेरे सर को पकड़ रखा था। इसलिए मैं अपना मुँह खोल कर प्रतीभा की चूत से निकलते पेशाब की धर को पीने लगा। ३–४ मिनट तक पेशाब की धार लगातार चल रही थी और फिर रुक रुक कर मेरे मुँह पर गिरने लगी। मैं समझ गया कि प्रतीभा की पेशाब की थैली खाली हो गयी है। तब मैंने अपना हाथ उठा कर प्रतीभा की दोनों चूचियों को पकड़ कर मसलने लगा।

Hindi Fonts By: SINSEX

पेशाब खतम होते ही प्रतीभा मुझसे बोली, "कैसा लगा मेरी चूत से निकलती पेशाब की धार पीके? मज़ा आया कि नहीं?" मैं तब प्रतीभा से बोला, "यार मज़ा आ गया। मैंने तो कहीं एक किताब में पड़ा था कि हसीन औरतों के पेशाब का टेस्ट भी बहुत अच्छा होता है। आज तुमने अपना पेशाब पिला कर वो बात साबित कर दी। सही में तुम्हरी इतनी सुंदर चूत से निकलती पेशाब की धार देख कर आज मैं धन्य हो गया।" मैंने प्रतीभा से पूछा, "अब क्या प्रोग्राम है?" तब प्रतीभा बोली, "अरे अभी तो रात बहुत बाकी है और इसका पूरा का पूरा फायदा मुझे उठाना है।" "ठीक है" मैं बोला। तब प्रतीभा मेरे ऊपर से उठ कर खड़ी हो गई और बोली, "क्या तुम्हे पेशाब नहीं करना? चलो अभी तुम भी पेशाब करलो फिर हमलोग फिर से पलंग पर चलते हैं।" मैं तब उठ कर अपना लंड अपने हाथ से पकड़ कर पेशाब करने की तैयारी करने लगा। तब प्रतीभा आगे बड़ कर मेरे लंड को पकड़ कर बोली, "अरे मैं हूँ ना? तुम खुद क्यों

पकड़ते हो अपना लंड। लाओ मुझे पकड़ने दो तुम्हारा लंड।" इतना कह कर प्रतीभा ने मेरे लंड को पकड़ लिया और बोली, "चलो मेरे राजा, अब मुझे भी दिखलाओ तुम्हारे लंड से निकलते पेशाब की धार को।" मैं तब प्रतीभा की चूचियों को पकड़ कर पेशाब करने लगा। मुझे पेशाब करते हुए अभी सिर्फ़ १०-१५ सेकँड ही हुए थे कि प्रतीभा ने झुक कर मेरा लंड जिसमे से अभी भी पेशाब निकल रहा था, अपने मुँह में भर लिया और मेरी तरफ़ देख कर मुझे आँख मार दी। प्रतीभा मेरे लंड को अपने मुँह में भर कर मेरे पेशाब को गटागट पीने लगी और जब मेरा पेशाब निकलना बँद हो गया तो उसने मेरे लंड को मुँह से निकाल कर जीभ से अपने होठों को साफ़ किया और बोली, "मज़ा आ गया। यह तो स्कॉच से भी ज्यादा अच्छा था। मुझे बहुत दिनों से इच्छा थी कि मैं किसी जवान मर्द के तगड़े लंड से निकलता हुआ पेशाब पीऊँ और आज मेरी इच्छा पूरी हुई। थैंक्स।"

मैंने तब आगे बड़ कर प्रतीभा को चूम लिया और हम लोग वापस कमरे में आ कर पलंग पर बैठ गये। प्रतीभा झट से लेट गयी और मेरे सीने में अपना एक हाथ फेरती रही। थोड़ी देर के बाद मैं प्रतीभा से बोला, "यार तु बहुत ही सैक्सी चीज है। मुझे तो लगता है कि तूने अबतक बहुत से लंड अपनी चूत को खिलाए होंगे। बोल ना कितने लंड खाये अब तक?" प्रतीभा मेरी तरफ़ देख मुस्कुरा दी और बोली, "मुझे तो अब याद भी नहीं कि मैं अब तक कितने लंड खा चुकी हूँ अपनी चूत में। छोड़ो यह सब बातें और चलो हमलोग फिर से शूरू करें अपनी चुदाई कि गाथा।" मैं तब अपने एक हाथ से प्रतीभा की चूत्तड़ों को सहलाता हुआ बोला, "यार मेरी जान, तुम उस समय इतना बिदक गयी जिसकी कोई इन्तहा नहीं। मुझे तो ऐसा लगा कि सचमुच मुझे अपने ऊपर से हटा कर तुम मुझे अपने कमरे में भेज दोगी।" प्रतीभा तब बोली, "और क्या मुझे बहुत गुस्सा आ गया था। साले तू बात ही ऐसी कर रहा था। जब औरतों को मरवाने के लिए भगवान ने चूत दी है तो गाँड क्यों मरवाई जाये? अच्छा अब बहुत हो गया है और थोड़ी देर के बाद सुबह भी हो जायेगी। ला अपना लंड मेरे मुँह के पास कर दे, मुझे तेरे लंड का रस चूस-चूस कर पीना है।" "अभी लो प्रतीभा रानी, और मुझे एक बर फिर से तुम्हारी चूत को चाट-चाट कर उसका रस पीना है" मैं प्रतीभा के मुँह के पास अपना लंड रख कर बोला।

प्रतीभा ने मेरे लंड को अपने हाथों से पकड़ कर अपने मुँह में भर लिया और मैंने भी प्रतीभा की चूत से अपना मुँह लगा दिया। मैं प्रतीभा की चूत अपनी उँगलियों से खोल कर जितना हो सकता था अपनी जीभ अंदर डाल कर उसके रस को चाट-चाट कर

पीने लगा और प्रतीभा भी मेरे लंड को पकड़ कर चूसने चाटने लगी । मैं प्रतीभा की चूत चाटते हुए कभी कभी उसकी गाँड में अपने उँगली फेर रहा था और जब जब मैं गाँड में उँगली फेर रहा था तब–तब प्रतीभा अपनी गाँड को भींच रही थी। थोड़ी देर तक ऐसे ही चलता रहा और फिर प्रतीभा मेरे लंड को अपने मुँह से निकाल कर बोली, "क्यों मेरी गाँड के पीछे पड़ा है, गाँडू? तुझे चूत चाहिए थी और तुझे चूत मिली। अब मेरी गाँड पर से अपनी नज़र हटा ले और चल अब मुझे चोद। मैं अब फिर से अपनी चूत में तेरा मोटा लंड खाने के लिए तैयार हूँ।" तब मैं प्रतीभा की चूत से अपना मुँह हटाते हुए बोला, "अरे प्रतीभा रानी क्यों नाराज़ हो रही हो। तुझे गाँड नहीं मरवानी है, मत मरवा। लेकिन मुझे कम से कम अपनी गाँड से खेलने तो दे? तब प्रतीभा बोली, "ठीक है, लेकिन गाँड में ना तो उँगली करना और ना ही अपना लंड पेलना।" इतना कह कर प्रतीभा ने अपनी पीठ के बल लेट कर अपने पैरों को ऊपर उठा दिया और बोली, "चल पेल अपना लंड मेरी चूत में और फाड़ दे मेरी चूत अपने लंड के धक्के से।"

Hindi Fonts By:

मैं तब प्रतीभा की चूची दबाते हुए बोला, "प्रतीभा रानी, मैं अब तुझे कुत्ते की तरह पीछे से चोदना चाहता हूँ। चलो अब तुम कुतिआ बन जाओ।" प्रतीभा मेरी बातों को सुन कर बोली, "अरे मैं तो कुत्तिया पहले से ही बन गयी हूँ और तभी तो तेरे मोटे हलब्बी लंड से अपनी चूत चुदवा चुकी हूँ। चल तू कहता है तो मैं तेरे लिए कुत्तिया बन जाती हूँ और तू मुझे एक कुत्ते कि तरह से चोद।" इतना कहकर प्रतीभा अपने घुटनों के बल बिस्तर पर उकड़ू हो गयी और अपने हाथों को बिस्तर पर रख दी। मैं झट से उठ कर प्रतीभा के पीछे बैठ गया और जैसे कुत्ता कुत्तिया की चूत सूँघता है वैसे मैं भी प्रतीभा की चूत सूँघने लगा।

SINSEX

मेरी हरकतों को देख प्रतीभा हँस पड़ी। तब मैं अपनी जीभ निकाल कर प्रतीभा की चूत को पीछे से चाटने लगा और प्रतीभा भी अपनी कमर को हिला हिला कर और घुमा घुमा कर अपनी चूत मुझसे चटवाती रही। थोड़ी देर तक ऐसे ही चलता रहा। फिर मैंने अपना मुँह उठा कर प्रतीभा की गाँड को चूम लिया और उसके गाँड के छेद पर अपनी जीभ लगा दी। प्रतीभा चौंक उठी लेकिन कुछ नहीं बोली। मैं फिर प्रतीभा की गाँड के छेद से अपनी जीभ लगा दी और फिर उसकी गाँड को चाटने लगा। प्रतीभा तब भी चुप रही। फिर मैंने अपनी एक उँगली प्रतीभा के गाँड से लगायी तो प्रतीभा उछल पड़ी और बोली, "साले भड़वे, क्या तेरे को मेरी चूत पसंद नहीं है? तबसे तु मेरी गाँड के पीछे पड़ा हुआ है। मैं पहले भी बता चुकी हूँ और फिर बोल देती हूँ कि मुझे गाँड

नहीं मरवानी है। तू मेरी चूत चाहे जितनी भी चोद ले मुझे कोई एतराज़ नहीं, लेकिन गाँड में मैं लंड नहीं लूँगी। लगता है तू भी मेरे पती जैसा गाँड का शौकीन है।"

तब मैंने प्रतीभा की गाँड को छोड़ दिया और उसकी चूत के मुहाने से अपने लंड का सुपाड़ा लगा दिया। लंड का सुपाड़ा लगते ही प्रतीभा अपनी कमर आगे पीछे हिलाने लगी और बोली, "पेल मेरी चूत के राजा, पेल मेरी चूत में अपना लंड पेल। ज़ोरदार धक्कों के साथ लंड पेल और मेरी चूत को रगड़ कर चोद।" मैं भी प्रतीभा की कमर पकड़ कर उसकी चूत में दनादन अपना लंड घुसेड़ने और बाहर खींचने लगा। प्रतीभा भी अपनी कमर हिला हिला कर मेरा लंड अपनी चूत को खिलाने लगी और बोली, "मार ले आज, मार ले मेरी चूत। इसकी धज्जियां उड़ा दे अपने लंड की चोटों से। साली को बहुत गुमाँ है कि मोटे से मोटा लंड भी इसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता। चोद मेरी चूत को और और तेज़्ज़्ज़ चोद..... और समझा दे मेरी चूत को कि मोटे लंड से चुदवाने का मतलब क्या होता है। हाय! चूत बहुत फैल गयी, है! मेरी चूत चरा रही है। अब मैं कल सुबह अपने पती के आते ही कैसे अपनी बे-रहमी से चुदी और पूरी की पूरी खुली चूत दिखलाऊँगी।" मैं प्रतीभा की बात सुनता जा रहा था और उसकी कमर पकड़ कर चोदता जा रहा था। थोड़ी देर के बाद मैं प्रतीभा की पीठ पर झुक गया और उसकी चूचियों को अपने दोनों हाथों से मसलने लगा। प्रतीभा और मस्त हो गयी और अपनी कमर को जोर जोर से हिलाने लगी। तब मैंने अपने एक उँगली पर थोड़ा थूक लगा कर प्रतीभा की गाँड के छेद से भिड़ा दिया और गोल गोल घुमाने लगा। प्रतीभा कुछ नहीं बोली। फिर मैंने प्रतीभा की पीठ पर फैलते हुए उसकी एक चूची को जोर से पकड़ लिया और अपनी उँगली प्रतीभा की गाँड में घुसेड़ दी। प्रतीभा छटपटाई लेकिन मैंने भी जोर से पकड़ रखा था और इसलिए वो कुछ नहीं कर पायी। मैं तब अपनी उँगली को प्रतीभा की गाँड के अंदर बाहर करने लगा। थोड़ी देर के बाद प्रतीभा शाँत हो गयी और चुप चाप अपनी चूत चुदवाने लगी।

एकाएक मैंने अपना लंड प्रतीभा की चूत में से निकाल कर प्रतीभा की गाँड के छेद पर रखा और एक झटके के साथ लंड को पूरा का पूरा प्रतीभा की गाँड में पेल दिया। प्रतीभा एकाएक चौंक उठी और चिल्लाने लगी, "ओह्ह्ह्ह्ह्ह! आअह्ह्ह्ह्ह्ह्ह! मररर गयीईईईई। निकाल..... मेरी गाआआआँड से अपना लंड। मैं मररर जाआआऊँगीईईईईईई। हाय! मेरी गाआआआआँड फट गयीईईईईईईईईई। ओह्ह्ह्ह्ह! आह्ह्ह्ह्ह! ओह्ह्ह्ह ओह्ह्ह्ह्ह।" मैं प्रतीभा की बातों पर ध्यान ना देते हुए उसकी गाँड अपने लंड से पेलता रहा। प्रतीभा चिल्ला रही थी, "हाय! माआआआआर

डाआआआआआआलाआआआआला, अरे निकाल....... अपना लौड़ाआआआआ मेरी गाआआआआँड से.........। साले...... मादरचोद्द् मुफ़्त का माल मिला है तभी मेरी गाआआआआँड फाआआआआड़ रहा है। अबे मदरचोद अपना लौड़ा मेरी गाँड से जल्दी निकाल। "

मैं प्रतीभा की बातों को ना सुनते हुए अपना लंड उसकी गाँड में पेले जा रहा था और थोड़ी देर के बाद पूछा, "प्रतीभा मेरी जान तेरी गाँड बहुत प्यारी है। इतनी टाईट है कि मेरा लंड फँस फँस कर अंदर घुस रहा है।" इतना कह कर मैंने अपने एक हाथ से प्रतीभा की चूत में अपनी एक उँगली पेल दी और धीरे धीरे अंदर बाहर करने लगा। थोड़ी देर ऐसे ही चलता रहा और धीरे धीरे प्रतीभा का चिल्लाना कम हो गया। अब वो मेरे हर धक्के के साथ साथ ओहहहह! ओहहहह! आहहह! आहहहह! हाय! कर रही थी। मैंने दो–चार और धक्के मार कर प्रतीभा से पूछा, "प्रतीभा रानी, अब कैसा लग रहा है? अब तेरी गाँड में मेरा लंड घुसा हुआ है, तेरी चूत में मेरी उँगली घुसी हुई है और तेरी एक चूची मेरे हाथों से मसली जा रही है। बोल अब कैसा लग रहा है। मज़ा आ रहा है कि नहीं?"

Hindi Fonts By:

तब प्रतीभा अपना चेहरा मेरी तरफ़ घूमा कर बोली, "साले मादरचोद, पहले तो मेरी गाँड फाड़ दी अपना लौड़ा घुसा कर और अब पूछ रहा है कि कैसा लग रहा है? साले भोंसड़ी के, चल जल्दी जल्दी से मेरी गाँड में अपने लंड से जोर जोर के धक्के लगा और मेरी गाँड को भी मेरी चूत जैसे फाड़ दे। हाय अब बहुत अच्छा लग रहा है। अब मार न मेरी गाँड, चोद साले, चोद मेरी गाँड।" इतना कह कर प्रतीभा अपनी कमर चला कर मेरे लंड को अपनी गाँड के अंदर बाहर करने लगी। तब मैं बोला, "अब क्या हो रहा है प्रतीभा? अब तो तुम खुद ही मेरे लंड को अपनी गाँड से खा रही हो। अब सब दर्द खतम हो गया है क्या?" प्रतीभा तब मुस्कुरा कर बोली, "पहले तो तूने मेरी गाँड में अपना मोटा गधे जैसा लंड घुसा कर मेरी गाँड फाड़ दी और अब पूछता है कि अब कैसा लग रहा रहा है? चलो अब बातें बाद में करना। अब मेरी बची खुची गाँड को और फाड़ दे। मुझे तुझसे गाँड मरवा कर बहुत अच्छा लग रहा है।" मैं तब प्रतीभा की कमर को अपने दोनों हाथों से कस कर पकड़ के उसकी गाँड में दनादन अपना लंड पेलने लगा और कहने लगा, "हाय! प्रतीभा रानी, तेरी गाँड बहुत ही मस्त है। बहुत टाईट गाँड है और मुझे गाँड में लंड पेलने में बहुत मज़ा आ रहा है। हाय! तेरी चूत और गाँड दोनों को चोद कर आज मुझे बहुत मज़ा आ रहा है।" प्रतीभा भी अपनी कमर मेरे साथ साथ चलाते हुए बोली, "मार ले आज मेरी गाँड। मुफ़त में मिली है

SIMSEX

आज तुझे मेरी गाँड। इसमे अपना लंड पेल पेल कर तू भी मज़े लो और मुझे मज़े दे। हाय! बहुत अच्छा लग रहा है। हाँ ऐसे ही मारता रह, पेलता रह अपना लंड मेरी गाँड में। ओहहहह! ओहहहहह! आहहहहह! मेरी चूत में अपनी उँगली डाल दे। मैं अब झड़ने वाली हूँ।" मैं भी प्रतीभा की चूत को अपने उँगली से खोदता रहा।

थोड़ी देर के बाद प्रतीभा झड़ गयी और हाँफने लगी। थोड़ी देर के बाद प्रतीभा बोली, "तूने मेरी गाँड को क्यों चोदा? मैंने तुझे मना किया था ना? जा अब मैं तुझसे अपनी चूत नहीं चुदवाऊँगी।" मैं तब प्रतीभा की चूत को सहलाते हुए बोला, "अरे मेरी जान, क्यों गुस्सा कर रही हो? तुम्हारी गाँड इतनी प्यारी है कि मैं अपने आप को रोक नहीं सका। तेरे छलकते हुए भारी भारी चुत्तड़ और उनके बीच में तुम्हारी गाँड का छेद, किसी को भी कत्ल कर सकते हैं। वैसे सच सच बताना कि तुम्हें मज़ा आया कि नहीं? क्या शानदार तुम्हारी गाँड है। मुझे तुम्हारी गाँड मारने में बहुत मज़ा आया।" तब प्रतीभा मेरे मुरझाए लंड को अपने हाथों से सहलाते हुए बोली, "हाँ मुझे गाँड मरवाने में बहुत मज़ा आया, लेकिन पहले लग रहा था कि मेरी गाँड फट ही जयेगी।" मैं तब प्रतीभा से बोला, "अरे मेरी जान लंड डालने से ना तो चूत फटती है और ना ही गाँड फटती है। अब देखो ना तुम्हारी चूत और गाँड दोनो मेरा लंड पूरा का पूरा खा गयीं और कुछ नहीं हुआ। अच्छा अब चलो बाथरूम में। मुझे अपना लंड धोना है और तुम्हारी गाँड भी धोनी है।" मेरी बातों को सुन कर प्रतीभा उठ कर खड़ी हो गयी और मेरे लंड को पकड़ कर मुझे भी उठा दिया। बाथरूम में जाकर पहले मैंने अपने हाथों से प्रतीभा की गाँड को साबुन लगा कर धोया और फिर प्रतीभा ने मेरे लंड को पकड़ कर मसल मसल कर धोया। फिर मुझे प्रतीभा खींच कर बेडरूम में ले अयी।

Hindi Fonts By: SINSEX

बेडरूम में आ कर प्रतीभा मुझसे लिपट कर बोली, "अब क्या इरादा है? वैसे रात के ढाई बज रहे हैं और मुझे तो नींद आ रही है। इतनी चुदाई से मेरी चूत और गाँड भी कल्ला रही है। लगता है कि चूत और गाँड दोनों अंदर से छिल गयी हैं।" फिर वोह अपने ग्लास में पैग बनाने लगी पर मैंने और पीने से मना कर दिया क्योंकि मैं अभी और चुदाई के मूड में था। मैं तब प्रतीभा को चूमते हुए बोला, "मेरी चुद्दकड़ रानी, क्या कोई अपनी सुहागरात को सोता है क्या? अभी तो मुझे तुम्हें कम से कम एक बार और चोदना है। आज रात जब तक मेरे लंड में दम है तब तक मैं तुम्हें चोदूँगा और तुम्हारी चूत मारूँगा। और तुम अपनी टाँगें फ़ैलाये मेरे लंड से अपनी चूत चुदवाती रहोगी, समझी?" प्रतीभा तब अपने ड्रिंक की चुसकी लेते हुए मुझसे बोली, "तू बहुत बड़ा चोदू है। आज रात की चुदाई से मेरी चूत पता नहीं कितनी बार पानी छोड़ी है कि

मैं बोल नहीं सकती। " मैं तब प्रतीभा से बोला, "रानी आज जो भी हो जाय मुझे रात भर तुझे चोदना है। अब चाहे चूत त्रप्त हो गयी हो या चूत कल्ला रही हो।" इतना कह कर मैंने प्रतीभा के दोनों कंधे पकड़ लिये और उसको बिस्तर पे ले जाकर बिठा दिया और फिर पूछा, "अब बोलो कैसे चुदोगी? मैं तुम्हरे ऊपर चड़ कर चोदूँ या फिर तुम मेरे ऊपर चड़ कर मुझे चोदोगी?" प्रतीभा मुस्कुरा कर बोली, "क्या फरक पड़ता है? चाहे तू ऊपर हो या मैं ऊपर हूँ। चुदेगी मेरी चूत ही ना? अब तू जैसे चाहे चोद मुझे। आज की रात मेरी चूत को फाड़ कर उसका भोंसड़ा बना दे, मेरी गाँड में अपना लंड पेल कर उसको भी फाड़ दे। कम से कम आज मुझे पता तो चले कि असली चुदाई की मैराथन दौड़ क्या होती है।" मैं तब खुद भी बिस्तर पर बैठ गया और उसकी चूची से खेलने लगा। प्रतीभा अपना पैग कतम करते हुए मुझसे बोली, "क्या बात है? लगता है कि तूने इतनी सी चुदाई में अपनी ताकत खो दी है। अरे और जोर जोर से मसल मेरी चूचियों को। मसल डाल मेरी इन चूचियों को। इनको भी तो पता लगे कि हाँ कोई मर्द इनको छेड़ रहा है, इनको मसल रहा है। इसीलिए तो कह रही थी एक पैग मार ले, कुछ जोश आ जायेगा।"

Hindi Fonts By: SINGH

मैं प्रतीभा की बातों को सुन कर बोल, प्रतीभा रानी मैं तेरी तरह कोई बड़ा पियक्कड़ नहीं हूँ, मैं ज्यादा पी कर ठीक से चुदाई नहीं कर पाऊँगा। और मैंने उसको अपनी गोद में लिटा लिया और दोनों हाथों से उसकी एक चूची पकड़ कर, जैसे आम निचोड़ा जाता है, चूची को दबाने लगा और दूसरी चूची को अपने मुँह में भर कर चूसने लगा। प्रतीभा बोली, "वाह, मज़ा आ गया। तू तो मेरी चूची ऐसे दबा रहा है जैसे कोई लंगड़ा आम निचोड़ निचोड़ कर खा रहा हो। और जोर जोर से चूसो मेरी चूची। बहुत मज़ा आ रहा है। हाय आह्ह्ह्ह ओह्ह्ह्ह्ह आह्ह्ह।" मैं तब प्रतीभा से बोला, "रानी तेरी चूचियाँ इतनी दबाने के बाद अब लंगड़ा आम नहीं रहीं, अब ये तो चौसा या फ़ज़ली आम हो गयी हैं। वैसे जो भी हो इनका रस बहुत ही मीठा है। मज़ा आ गया तेरी चूचियों का रस पी कर।" इसके बाद मैंने प्रतीभा को उठा कर अपनी गोद में बिठा लिया। प्रतीभा मेरी गोद में मेरी कमर के दोनों तरफ़ अपने पैरों को करके मेरी तरफ़ मुँह करके बैठ गयी। अब मेरा लंड ठीक प्रतीभा की चूत के सामने था। मैं प्रतीभा की चूचियों को फिर से मसलने लगा और प्रतीभा ने अपना एक हाथ बढ़ा कर मेरा लंड अपनी चूत के छेद से भीड़ा दिया और खुद ही अपनी कमर हिला कर एक झटका दिया और मेरा लंड फिर से प्रतीभा की चूत में घुस गया। मेरा लंड के प्रतीभा की चूत में घुसते ही प्रतीभा ने मेरे गले में अपनी बाहों को लपेट लिया और अपनी कमर उचका कर मुझे चोदने लगी। प्रतीभा जैसे ही अपनी कमर को उठा कर अपनी चूत से

मेरा लंड बाहर करती, मैं उसकी चूची को जोर से दबा देता। प्रतीभा तब आह्ह्ह ओह्ह्ह करके एक झटके के साथ मेरा लंड फिर से अपनी चूत में घुसा लेती।

प्रतीभा मुझको कुछ देर तक चोदती रही और फिर थक कर मेरा लंड अपनी चूत में घुसेड़े ही रुक गयी। मैं तब प्रतीभा से बोला, "क्यों रानी क्या चोदते चोदते थक गयी?" प्रतीभा मेरे होंठों पर चुम्मा देते हुए बोली, "हाँ, मुझसे अब नहीं चोदा जाता। अब तू ही मुझे लिटा कर जैसे मर्द किसी रंडी को चोदता है, वैसे ही चोद। मेरी चूत से आग निकल रही है। और जब तक इसको तेरे लंड का पानी नहीं मिलेगा यह आग नहीं शाँत होगी।" मैंने तब प्रतीभा की कमर पकड़ कर अपनी कमर चला कर चोदना चालू किया और उससे पूछा, "क्यों रानी क्या मेरी चुदाई में मज़ा आ रहा है?" प्रतीभा मेरी छाती के निप्पल को अपने नाखुन से कुरेदते हुए बोली, "भला हो मेरे पतीदेव की टूर का और उस टैंकर का जो कि बीच रासते में खराब हो गया है, नहीं तो इस चुदाई का मज़ा मुझे कभी न मिलता।" मैं तब प्रतीभा की चूत में दो चार धक्के मार कर बोला, "रानी एक बात बताओ? लगती तो तुम बहुत सैक्सी और चुदक्कड़ हो, लेकिन तुम कहती हो कि तुम्हारा पती एक गाँडू इन्सान है। फिर तुम अपनी चूत कि जलन कैसे बुझाती हो?"

प्रतीभा तब बोली, "हाँ मेरा पती एक गाँडू इन्सान है और उसे गाँड मरवाने का और मारने बहुत शौक है। मेरे पती को चूत से कुछ लेना देना नहीं है। वैसे उसे छोड़ मेरी ससुराल में सब बहुत ही सैक्सी और बहुत ही चोदू हैं।" मैंने पूछा "मतलब?" तब प्रतीभा बोली, "अरे मेरे ससुराल में मेरे ससुर जी तो बहुत चोदू इन्सान हैं। वो तो हफ़्ते में कम से कम तीन चार बार मेरे ऊपर चड़ कर मेरी चूत की अच्छी तरह से धुनाइ करते हैं और अपने लंड की पिचकारी से मेरी चूत की गर्मी को शाँत करते हैं। और तो और जब मेरे ससुर जी मुझे चोदते हैं तब मेरी सास मेरी बगल में बैठ कर मेरी चूचीयों को मसलती रहती हैं और ससुरजी को उक्सा उक्सा कर मेरी चुदाई करवाती हैं।" मैंने आश्चर्य से पूछा, "यह कैसे होता है? और कैसे शूरू हुआ?" तब प्रतीभा मुझ्से बोली, "तू मेरी चुदाई चालू रख मैं बताती हूँ मेरी ससुराल की कहानी।"

प्रतीभा तब बोली, "शादी के बाद जब घर के सारे मेहमान मेरी ससुराल से चले गये तो ससुराल में मैं, मेरे पती, मेरे सास ससुर और मेरी ननंद और ननदोई रह गये। मेरी ननंद और ननदोई उसी शहर में रहते थे इसलिए वो बाद में जाने वाले थे। मेरी ससुराल वालों को मेरे पती की कमियाँ मालुम थीं, लेकिन फिर भी उन्होंने मेरी शादी करवा दी

थी। एक दिन दोपहर में मैंने सास को अपने दामाद से नंगी हो कर चुदवाते देख लिया, या यह कहो कि उन्होंने अपनी चुदाई मुझे दिखला दी। हुआ ऐसे कि एक दिन दोपहर में मैं अपने कमरे में सो रही थी कि मुझे कुछ खुसुर फुसुर कि आवाज़ सुनाई दी। मैं उठ कर देखने गयी तो देखा कि मेरे नन्दोई और मेरी सास बेडरूम में नंगे लेटे हुए हैं और नन्दोई अपनी सास की चूचियों से खेल रहे हैं। तभी सास जी नन्दोई से कुछ बोलीं और नन्दोई जी ने उठ कर सास के पैरों के बीच लेट कर उनकी चूत पे अपना लंड भीड़ा दिया और फिर एक धक्के के साथ अपना लंड सास की चूत के अंदर पेल दिया। फिर सास भी नीचे से अपनी कमर उठा उठा कर चुदवाने लगी। मैं कमरे के बाहर खड़ी खड़ी सास और दामाद की चुदाई देख रही थी और अपनी साड़ी के ऊपर से अपनी चूत को सहला रही थी। तभी सास जी की नज़र मेरे ऊपर पड़ गयी और उन्होंने बिना शरम के मुझे कमरे में बुला लिया और मुझसे पूछी, "बहू कमरे के बाहर खड़ी खड़ी क्या देख रही हो? हमारे पास आओ और पास बैठ कर हमलोगों की चुदाई देखो। तुम्हें शरमाने की कोई जरूरत नहीं है। यह घर का मामला है।" मैं तब धीरे धीरे कमरे के अंदर जा कर बिस्तर के पास खड़ी हो गयी। मुझे देखते ही नन्दोई जी मुस्कुरा दिये और अपना हाथ बढ़ा कर मेरी चूची को दबाना शूरू कर दिया। तब सास मुझे कपड़े उतार कर नंगी होने के लिए बोली।

मैं भी सास और दामाद की चुदाई देख कर गरमा गयी थी और इसलिए मैं भी शरम के साथ साथ अपने कपड़े उतार कर नंगी हो गयी। तब नन्दोई जी अपनी सास को चोदते हुए मेरी चूचियों को पकड़ कर मसलने लगे और सास मेरी चूत में अपनी उँगली डाल कर धीरे धीरे अंदर बाहर करने लगी। मैं इस दोहरी मार से तड़प गयी और झुक कर सास की चूचियों को अपने मुँह में भर कर चूसने लगी। मेरे झुकते ही नन्दोई जी अपना हाथ मेरे चूचीयों से हटा कर मेरे चूत्तड़ों पर ले गये और मेरे नंगी चूत्तड़ और मेरी चूत को सहलाने लगे। ऐसे ही थोड़ी देर तक चलता रहा और थोड़ी देर के बाद नन्दोई जी सास की चूत में अपने लंड की पिचकारी छोड़ कर हँफने लगे और सास ने भी कमर उठा कर नन्दोई जी का पूरा का पूरा लंड अपनी चूत में ले कर अपने पैरों से नन्दोई जी की कमर को कस कर पकड़ लिया और थोड़ी देर तक शाँत पड़ी रही। मैं समझ गयी कि इनकी चुदाई पूरी हो गयी है। थोड़ी देर के बाद सास ने मेरे पास आ कर मुझे नन्दोई की गोद में धकेल दिया और खुद बैठ कर नन्दोई का लंड अपने मुँह में लेकर चूसने लगी। थोड़ी देर में नन्दोई जी का लंड फिर से खड़ा हो गया और वो मुझे वहीं बिस्तर पर लिटा कर मेरे ऊपर चड़ गये और अपना मोटा लम्बा लंड मेरी चूत में पेल दिया। शादी के पहले भी मैं अपनी चूत में कई लंड

पिलवा चुकी थी फिर भी नन्दोई जी का लंड कुछ ज्यादा ही लम्बा और मोटा था और इसलिए मेरी चूत तो मानो फट ही गयी और मैं जोर से उईईईईईईईईईईईई माँ मररर गयीईईईईईईई अप्नाआआआआआ लंड निकालो मेरी चूत से कह कर चिल्ला उठी। सास मेरे मुँह को चूमते हुए बोली, "बेटी बस अब और थोड़ा बर्दाश्त कर, अभी सब ठीक हो जायेगा। बस अभी और थोड़ा सा लंड बाहर है। जैसे ही पूरा का पूरा लंड अंदर घुस जायेगा तुझे बहुत मज़ा आयेगा।" मैं जैसे तैसे नन्दोई जी का लंड अपनी चूत में झेलती रही। लेकिन इस दौरान नन्दोई चुप नहीं थे और धीरे धीरे अपना लंड मेरी चूत के अंदर बाहर कर रहे थे और थोड़ी देर के बाद मुझे भी मज़ा आने लगा और मैंने भी अपने पैरों से नन्दोई जी की कमर पकड़ कर और अपनी कमर ऊपर उठा उठा कर नन्दोई जी के धक्कों का जवाब देना शूरू कर दिया। अब सास ने मेरी एक चूची को अपने मुँह में लेकर चूसना शूरू कर दिया और बोली, "बेटी मुझे मालुम है कि तेरी चूत शादी के बाद अभी चुदी नहीं होगी और इसलिए मैं आज तेरी चूत को चुदाई का मज़ा दिलाने के लिए यह सब ड्रामा की थी। अब तु आराम से अपने नन्दोई से जी भर कर अपनी चूत चुदवा। कोई कुछ नहीं बोलेगा।"

Hindi Fonts By:

तब मैं अपनी सास से बोली, "लेकिन माँजी, घर में आपके अलावा ननंद और बाबुजी भी तो हैं। उनको अगर यह सब मालुम हो गया तो?" तब सास मुझसे बोली, "अरे मेरी प्यारी बहू रानी, तू बिल्कुल चिन्ता मत कर। तू तो बस अब आराम से मज़े ले ले कर अपने नन्दोई का लंड अपनी चूत में पिलवाती रह। तू बाबुजी और अपनी ननंद के बारे में सोचना और चिन्ता करना छोड़ दे।" मैं तब भी सासजी से बोली, "लेकिन माँजी उन्होंने कभी मुझे और नन्दोईजी को चोदते देख लिया तो क्या होगा? तब तो गज़ब हो जायेगा माँजी।" तब सास बोली, "अरे वो लोग क्या देखेंगे? वो भी इस समय किसी कमरे में अपनी चुदाई में लगे होंगे।" मैं तो चौंक गयी और सास से पुछी, "क्या बोल रही हैं माँजी? सास तब मुझसे बोली, "हाँ बेटी, यह सच है। तेरी ननंद अपने बाप का लंड अपनी चूत में शादी के पहले से ही पिलवा रही है और यह बात तेरे नन्दोई को शादी के पहले से ही पता थी। इसलिए तेरी ननंद की शादी में दहेज के अलावा यह शर्त भी थी कि शादी के बाद तेरा नन्दोई मुझे भी चोदेगा। और इसी वजह से मैं तब से तेरे नन्दोई का लंड अपनी चूत में डलवा रही हूँ और आज तूने भी डलवा लिया।" तब मैंने अपनी सास से पूछा, लेकिन माँजी ननंद और ससुर जी ने कैसे अपनी चुदाई शूरू की?" तब सास बोली, "अरे बेटी क्या बोलूँ, तेरे ससुर जी शूरू से ही बहुत चोदू इन्सान हैं और जब तेरी ननंद बड़ी और जवान हुई तो उस पर बाप की नज़र पड़ गयी। एक दिन मैं किसी काम से बाहर गयी हुई थी और तेरे ससुर ने मौका

SINSEX

मिलते ही अपनी बेटी की चूत की सील अपने लंड से तोड़ दी। एक बार जब तेरी ननंद को चुदाई का मज़ा मिल गया तो वो भी दिल खोल कर अपने बाप से चुदाने लगी। कभी कभी तो हम माँ और बेटी एक साथ एक बिस्तर पर लेटा कर तेरे ससुर जी से चुदवती हैं। अच्छा अब बस बहुत बोल चुकी अब तू अपने नन्दोई जी से अपनी चूत की गर्मी शाँत कर।" मैं सास की बातों को सुन कर सन्न रह गयी, और जब मुड़ कर देखा तो पाया कि नन्दोई का लंड अब फिर से तन गया है। मैंने नन्दोई का लंड अपने मुँह में भर लिया और अपने हाथों से सास की चूत को सहलाने लगी।

थोड़ी देर के बाद नन्दोई मेरे ऊपर चड़ गया और मुझे चोदने लगा और मैं चुपचाप अपनी कमर उठा उठा कर नन्दोई से चुदवाती रही। नन्दोई मेरी दोनों चूचियों को मसल मसल कर मुझे जोर दार झटकों के साथ चोदता रहा। थोड़ी देर के बाद नन्दोई ने अपने धक्कों की रफ़्तार तेज कर दी और थोड़ी के बाद वो मेरी चूत में अपने लौड़े की पिचकारी छोड़ दिया। नन्दोई झड़ने के बाद मेरे ऊपर लेट कर हाँफता रहा और पाँच मिनट के बाद अपना लंड मेरी चूत से निकाल लिया। जैसे ही मेरी चूत से उसका लंड निकला तो उसमे से उसका ढेर सारा सफ़ेद और गाड़ा गाड़ा रस निकलने लगा। तब मेरी सास झट से मेरी चूत में अपना मुँह लगा कर मेरी चूत को चूसने लगी और चूत को चाट चाट कर बिल्कुल साफ़ कर दिया।

चूत साफ़ करने के बाद सास मुझसे बोली, "अरे बेटी यह तो मर्द का अम्रत है। इसे पीने से औरतों का स्वास्थय अच्छा रहता है और चेहरे पर चमक बनी रहती है। तुझे भी जब भी मौका मिले इस अम्रत को छोड़ना नहीं पी जाना।" अब मेरी चूत की चुदाई नन्दोई से होने लगी, क्योंकि वो लोग अक्सर हमारे घर पर आ जाते और रात भर रुक कर सुबह चले जाते थे। एक दिन ससुरजी ने मेरी चुदाई नन्दोई के साथ देख लिया और तब वो भी मुझे चोदने लगे। अब घर का माहौल कुछ ऐसा है कि जब मौका लगता है कोई ना कोई किसी ना किसी को पकड़ कर चाहे जहाँ हो, बेडरूम में, किचन में, ड्राईंगरूम में, बाथरूम में या छत पे, पकड़ कर चोदता रहता है। कभी–कभी तो एक ही बेड पे मुझे और ननंद को लिटा कर ससुर जी हमलोगों को चोदते हैं या फिर मुझे और सास जी को लिटा कर नन्दोई जी हमें चोदते हैं। अब घर पर सास जी ने अपने मायके से एक हट्टा कट्टा जवान नौकर भी रख लिया है और वो भी मुझे, ननंद जी को और सास जी को रोज़ चोदता है।"

मैंने पूछा, "अच्छा? नौकर भी तुम्हारी ससुराल की औरतों को चोदता है?" तब प्रतीभा

Hindi Fonts By SINSEX

बोली, "अरे वो सास के मायके का है। शूरू में तो वो बहुत शरीफ दिखता था। लेकिन जब उसे घर में हो रही फ्री सैक्स की चुदाई का किस्सा मालुम चला तो वो भी रंग में रंग गया और पहले ननंद को, फिर सास को और सबसे बाद में मुझे चोदने लगा।" मैंने तब प्रतीभा से पूछा, "कैसा है तुम्हारे नौकर का लंड? उससे चुदवाकर क्या तुम लोगों को मज़ा आता है?" तो प्रतीभा बोली, "नौकर का लंड बहुत लम्बा और मोटा है। जब उसका लंड खड़ा हो जाता है तो वो करीब ९" लम्बा और ३" मोटा हो जाता है। अब वो नौकर घर में नंगा ही रहता है और जब भी जी करता है वो ननंद, सास या मुझे कहीं भी पकड़ कर चूची मसलते हुए चोदना शूरू कर देता है। वैसे उसका चोदने का फ़ेवरिट स्टाईल पीछे से चूत में लंड डाल कर चुदाई करने का है। अभी कुछ दिन पहले मैं और मेरी सास किचन में खाना बना रहे थे। वो नौकर कहीं बाहर काम कर रहा था। नौकर एकाएक किचन में आया और किसी से कुछ ना कहते हुए उसने सास की साड़ी पीछे से पकड़ कर उठायी और उनको झुका कर उनकी चूत में पीछे से अपना लंड पेल दिया और लगा दना-दन धक्के मारने।

मैं जब उससे बोली, "अरे इतनी जल्दी क्या है। सास जी कहीं भाग तो नहीं रही। कमरे में ले जाकर बिस्तर पर चोदो।" तो वोह बोला, "अरे मेरी बहू रानी! मैं क्या करूँ? मैंने अभी अभी बाहर एक कुत्तिया को कुत्ते से चुदते देखा और मैं गरम हो गया हूँ। इसलिए माँजी को अभी इसी वक्त चोदना है। हाँ बाद में मैं आपको कमरे में ले जाकर पलंग पर लिटा कर आपको नंगी करके चोदूँगा, लेकिन अभी मुझे अपने लंड का पानी माँजी की चूत में निकाल लेने दो।" इतना कह कर उस नौकर ने करीब १५ मिनट तक चोदा और अपने लंड की पिचकारी से सास की चूत को भर दिया। सास जी भी कुछ नहीं बोली और चुदने के बाद साड़ी से अपनी चूत पोंछ ली और मुस्कुराने लगी। नौकर अपने लंड को माँजी की साड़ी से पोंछ कर बाहर चला गया और जाते वक्त मुझसे बोल गया, "बहु रानी, खाना खाने के बाद मैं तुमको चोदना चाहता हूँ। खाने के बाद तुम किसी और से चुदने ना चली जाना, समझी?" मैं उससे बोली कि अगर बाबूजी ने बुला लिया तो?" तो वो बोला, "अरे बाबूजी के लिए तेरी सास और तेरी ननंद है ना। वो उन दोनों की चूत और गाँड में अपना लंड डाल कर उनको चोदेंगे और तेरी चूत में अपना लंड घुसेड़ कर तुझे चोदूँगा।" नौकर की बात सुन कर मेरी सास नौकर से बोली, "अरे तेरा लंड है या चोदन मशीन? अभी अभी मेरी चूत चोद-चोद कर भोंसड़ा बनाई है और अभी फिर बहू से बोल रहा है कि तुझे चोदना है? चल अभी अपने काम पर जा। दोपहर की दोपहर देखी जायेगी।" मैं भी नौकर को देख कर हाँ बोल दी और वो नौकर चला गया।

Hindi Fonts By: SINSEX

मैं अब तक चुप चाप प्रतीभा के मुँह से प्रतीभा की ससुराल की कहानी सुनता रहा। फिर मैंने प्रतीभा से पूछा, "क्यों रानी, यह बताओ कि तुम्हें शरम नहीं आती? अपने ससुर के सामने या अपने नन्दोई के सामने चूत खोल कर लेटना और उनके लंड को अपनी चूत में डलवा कर चुदवाना?" तो प्रतीभा मेरे हाथ को पकड़ कर अपनी चूची से लगाते हुए बोली, "हाँ, पहले-पहले मुझे अपने ससुर या नन्दोई के सामने नंगी होने में या उनसे चूत चुदवाने में बहुत शरम आती थी, लेकिन मेरी ससुराल में चुदाई के साथ-साथ शराब भी खुल कर चलती है और थोड़ा नशा सवार हो तो शरम नहीं आती, उल्टे जब मेरी चूत में खुजली चलती है, मैं तब ससुर जी य अपने नन्दोई का लंड पकड़ कर उनसे बोलती हूँ, "मुझे चोदिये ना एक बार, मेरी चूत में खुजली हो रही है और चूत को लंड की भूख लगी हुई है।" और तब वो लोग मुझे वहीं जमीन या बिस्तर पर पटक कर या मेज या कुर्सी पर झुका कर मेरी चूत में अपना लंड डाल देते हैं और चोद देते हैं।

मैंने तब प्रतीभा से पूछा, रानी, तुमने इतनी चूत मरवायी है, लेकिन अभी तक गाँड नहीं मरवायी?" तब प्रतीभा बोली, "नहीं मैंने अभी तक अपनी गाँड से किसी का लंड नहीं खया है। तूने ही पहली बार मेरी गाँड में अपना लंड घुसेड़ा है।" तब मैंने फिर पूछा, "लेकिन क्या तुम्हारी सास य तुम्हारी ननंद भी अपनी गाँड नहीं मरवाती थी?" प्रतीभा तुनक कर बोली, "अरे मेरी सास और मेरी ननंद तो खुब गाँड मरवाती थी। कभी-कभी तो मेरे ससुर या मेरे नन्दोई मुझे चोदने के बाद मेरी सास य मेरी ननंद को उसी बिस्तर पर उल्टी लिटा कर मेरे सामने ही उनकी गाँड मारते हैं।"

मैंने तब प्रतीभा से पूछा, तुम्हारे मायके में तुम्हारी ससुराल में फ्री चुदाई का किस्सा मालुम है?" तब प्रतीभा बोली, "पहले नहीं मालुम था। लेकिन एक बर मेरी माँ मेरी ससुराल अएयी थी और तब उन्होंने मुझे अपने ससुर और नन्दोई से चुदवाते देख लिया।" मैंने पूछा, "तब क्या हुआ?" कोहराम मच गया होगा?" प्रतीभा मुस्कुराते हुए बोली, "नहीं। पहले तो माँ थोड़ी बहुत बिगड़ी लेकिन जब नन्दोई से मेरी सास को चुदते देखा तो वो चुप हो गयी। फिर एक दिन उनको भी मेरे ससुर जी ने मेरी बगल में लिटा कर साड़ी कमर तक उठा कर चूत नंगी कर के चोद दिया। माँ ने भी मस्त हो कर अपनी कमर उछाल-उछाल कर ससुर जी से खूब चुदवया। तब रात को माँ ने मेरे नन्दोई से भी नंगी होकर सास के साथ एक ही बिस्तर पर लेटा कर खूब चुदवया और सास की चूत को चाट-चाट कर साफ़ किया। अब जब भी मेरी माँ मेरी ससुराल आती

है तो वो खूब मज़े से मेरे ससुर या नन्दोई से खूब चुदवाती है। मैं प्रतीभा की चूत को चूमते हुए उसकी चूचियों को मसल कर बोला, "प्रतीभा रानी, लगता है कि तेरी माँ भी तेरी तरह बहुत चुदक्कड़ है और अपनी चूत से बहुत लंडों का स्वाद चखी है। क्या तेरी माँ ने तेरी ससुराल में अपनी गाँड नहीं मरवयी?" प्रतीभा अपनी कमर उठा कर मेरे मुँह में अपनी चूत को और जोर से रगड़ते हुए बोली, "हाँ, मेरी माँ ने मेरे ससुर और नंदोइ से अपनी गाँड भी बहुत बार मरवायी है। कभी-कभी मेरे ससुर और नन्दोई ने उनको एक साथ चोदा है। एक मेरी माँ को अपने ऊपर चड़ कर उनकी चूत में अपना लंड घुसेड़ कर चोदत है और दूसरा उनके नीचे से उनकी गाँड में अपना लंड पेलत है। और मेरी माँ दोनों के बीच दब कर झूम-झूम कर अपनी चूत और गाँड से दोनों का लंड खाती है।" प्रतीभा अपनी कमर उठा कर मेरे मुँह से अपनी चूत रगड़ते हुए बोली, "मैंने ही अब तक अपनी गाँड बचा कर रखी थी और आज तूने मेरी गाँड की सील तोड़ दी। अब मैं भी अपनी ससुराल जाकर अपने ससुर और नन्दोई से अपनी गाँड चुदवाऊँगी। " मैंने तपाक से पूछा "क्यों तुम्हारे ससुराल वाले पूछेंगे नहीं, एकाएक तुम्हारे में ऐसा चेंज कैसे हुआ?" प्रतीभा बोली, "तो क्या हुआ? मैं उनसे आज रात की हमारी चुदाई की दास्तान पूरी की पूरी बोल दूँगी। उनको भी तो पता लगे उनके घर की बहू सिर्फ़ घर के अंदर ही नहीं चुदती, बाहर भी चुदवाती है। मुझे मालूम है कि मेरी सास और मेरी ननंद अपने घर के अलावा भी बाहर के लोगों से मौका मिलते ही अपनी चूत चुदवा लेती हैं।"

मैं अब तक प्रतीभा की बातों को सुन कर बहुत हैरान और गरम हो गया था। मैं प्रतीभा से बोला, "मुझे तुम्हारी ससुराल की फ्री सैक्स और फ्री चुदाई सुन कर तुम्हारी ससुराल जाने का मन कर रहा है। तो प्रतीभा मुझसे बोली, अभी तुम मुझे चोदो। देखो मैं तुमसे चुदने के लिए अपनी चूत खोले बैठी हूँ।" इतना बोल कर प्रतीभा अपने दोनों पैरों को फ़ैला दी और अपने हाथों से अपनी चूत को खोल कर मुझे दिखाने लगी। मैंने तब बिस्तर पर लेटा कर प्रतीभा को खींच कर अपने ऊपर चढ़ा लिया। प्रतीभा ने भी अपने हाथों से मेरा लंड पकड़ा और अपनी चूत से भिड़ा कर मेरे ऊपर बैठ गयी और उछल-ऊछल कर अपनी चूत चुदवाती रही। मैं नीचे लेटा लेटा प्रतीभा की दोनों चूचियों को अपने हाथों में लेकर मसलता रहा और बीच-बीच में अपना हाथ नीचे ले जा कर प्रतीभा की गाँड में उँगली करता रहा।

थोड़ी देर के बाद प्रतीभा के उछलने की रफ़्तार तेज़ हो गयी और मैं समझ गया कि अब फ्रतिभा झड़ने वाली है। तब मैं भी नीचे से अपनी कमर उठा उठा कर प्रतीभा की

चूत में झटके के साथ अपना लंड पेलता रहा। थोड़ी देर के बाद मैं और प्रतीभा दोनों एक साथ झड़ गये। हम लोग उठ कर बाथरूम में जा कर थोड़ा फ्रैश हुए और कमरे में आ गये। घड़ी की तरफ़ देखा तो सुबह के ४:३० बज रहे थे। इसलिए मैंने और प्रतीभा ने अपने अपने कपड़े पहन लिये और मैं चुप चाप अपने कमरे में चला आया और बिस्तर पर सो गया। जब आँख खुली तो देखा कि दोपहर के २:३० बजे हैं। मैं बाहर आया तो प्रतीभा का कमरा बँद देखा। नीचे रिसेप्शन पर पूछने से मालुम हुआ कि प्रतीभा और उसका पती सुबह ही कमरा छोड़ कर चले गये। मुझे बहुत अफ़सोस हुआ कि मैंने प्रतीभा क फोन या मोबाईल नम्बर नहीं लिया है।

॥॥॥ समाप्त ॥॥॥

Hindi Fonts By:
SINSEX